एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन परम विशिष्ट सेवा मैडल

एवम् विशिष्ट सेवा मैडल

एयर अफसर प्रशासन (सेवानिवृत)

जन्म शखांतारा जिला सियालकोट, विभाजन के पश्चात आपका परिवार जालंधर में रहने लगा, शिक्षा डी. ए. वी. कालेज जालंधर तथा बाद में एस. ए. जैन कालेज अम्बाला शहर। 1952 में भारतीय वायुसेना की प्रशासकीय शाखा में कमीशन।

रक्षा सेनाओं से अपने सम्बन्ध के प्रारम्भिक दिनों से ही आपने सभी उड़ान गतिविधियों में गहरी रुचि ली है, उड़ान में उनकी इस अभिरुचि के कारण इन्हें उड़ान यातायात नियंत्रक अधिकारी के पद पर नियुक्त किया। आप भारतीय वायुसेना में ध्वनि से तेज गति के लड़ाकू विमानों के शामिल होने पर हवाई यातायात में सुरक्षा संबंधी उपायों को लागू करने के सशक्त माध्यम रहे हैं। उनकी निर्विवाद व्यवसायिक कुशलता के कारण ही हवाई दुर्घटनाओं की दर में सराहनीय कमी हुई है जिससे कि करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है।

एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन ने अपने लम्बे विशिष्ट सेवा काल में यूनिट कमांड व वायुसेना मुख्यालय में विविध प्रशासकीय नियुक्तियों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। आपने 1971 के भारत–पाक युद्ध में उड़ान शाखा में न होते हुए भी एक छोटे विमान चालन का अत्याधिक जटिल व साहसपूर्ण कार्य किया जो सम्भवतः अपने आप में एक उदाहरण है। 1969 में भारत के राष्ट्रपति ने उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया।

1991 में आपको परम असाधारण कोटि की सेवाओं के उपलक्ष में राष्ट्रपति द्वारा परम विंशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया जिसका वाचन उल्लेख इस प्रकार है :

"एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन को 1952 में भारतीय वायुसेना में कमीशन प्रदान किया गया। 38 वर्षों की अपनी लम्बी और प्रशंसनीय सेवा के दौरान इन्होंने कई प्रतिष्ठापूर्ण नियुक्तियों पर उत्कृष्टता से कार्य किया। हवाई यातायात नियंत्रक के रूप में अपनी सेवा के आरम्भिक दौर में इन्होंने प्रयोग क्षमता सुरक्षा बढ़ाने और आपात स्थितियों में वायुयानों को सुरक्षित वापिस लाने के लिए दिशा–निर्देश कार्य–विधियां तैयार करने में उच्चकोटि की प्रवीणता एवं नए–नए परिवर्तनों और सूझबूझ का प्रदर्शन किया। इनके द्वारा निर्धारित व्यवसायिक मानकों को अब भी मानदण्डों के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। भारतीय वायुसेना के एकमात्र हवाई यातायात नियंत्रण स्कूल की कल्पना और स्थापना में इनका योगदान रहा है।

इन्होंने दो बड़े बेसों के मुख्य प्रशासनिक अफसर के रूप में सेवा की। अपने व्यवसायिक दृष्टिकोण और निष्ठा से इन्होंने प्रशासनिक ढांचे और सेवाओं में व्यापक सुधार किया। जिससे इन बेसों की कार्यात्मक और संक्रियात्मक क्षमता में काफी वृद्धि हुई।

प्रभारी वायु अफसर प्रशासन के रूप में इन्होंने भारतीय वायुसेना में प्रशासनिक कार्य–कलापों के सम्पूर्ण तंत्र का मार्ग–दर्शन किया। अपने स्वाभाविक उत्साह और व्यावसायिक कौशल से इस दूभर कार्य को करते हुए इन्होंने परम्परागत तरीकों और सामान्यतः स्वीकृत विचारों से ऊपर उठने की हिम्मत की। दौड़ पथ की मरम्मत में उत्कृष्ट उपाय लागू किए, जिनका वायुसेना की संक्रियाओं पर गंभीर असर पड़ता है।

सेना खेलकूद नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में एयर अफसर ने साहसिक खेलकूद की गतिविधियों को बढ़ावा देने में गहरी रूचि दिखाई और सशस्त्र सेनाओं के कार्मिकों में सहयोग की भावना और दृढ़ चरित्र का विकास करने में इन्होंने असीम योगदान दिया।

इस प्रकार एयर मार्शल प्रद्युम्न कुमार जैन, विशिष्ट सेवा मैडल ने परम असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा की है।

जनवरी 1991 में एयर अफसर प्रशासन के पद से सेवानिवृत।

ले. जनरल अशोक मांगलिक, परम विशिष्ट सेवा मैडल व सेना मैडल

महानिर्देशक तोपखाना (सेवानिवृत)

जन्म 20 जून 1933, पिता स्व. डा. वी. एस. मांगलिक किंग जार्ज मैडिकल कालेज लखनऊ के प्रिंसिपल एवं पैथोलाजी के विख्यात प्रोफेसर थे। जनरल मांगलिक की शिक्षा कोलीन ताल्लुकदार कालेज लखनऊ में हुई, जनवरी 1949 को संयुक्त सेवा विंग के प्रथम कोर्स में प्रवेश तथा 28 दिसम्बर 1952 को भारतीय थल सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त। महत्वपूर्ण नियुक्तियां व उपलब्धियां इस प्रकार हैं।

जनरल स्टाफ आफीसर ग्रेड–III तोपखाना रेडिमेंट ब्रिगेड मुख्यालय में रहे। 1966–67 में डिफेंस सर्विस स्टाफ कालेज वेलिगंटन से स्नातक एवं एक पहाड़ी ब्रिगेड के डी. ए. ए. व क्वार्टर मास्टर जनरल। लैफ्टिनेंट कर्नल के पद पर 42वीं फील्ड रेजिमेंट की कमान संभाली, उनकी इसी 42वीं रेजिमेंट ने 1971 के भारत–पाक युद्ध में पंजाब क्षेत्र में "डेराबाबा नानक" नामक युद्ध–सम्मान व कई वीरता पुरस्कारों का अर्जन किया। आपको अपनी रेजिमेंट के कुशल व वीरतापूर्वक संचालन के लिए "सेना मैडल" से अलंकृत किया गया। सेना मुख्यालय तथा उत्तरी कमान मुख्यालय में महत्वपूर्ण नियुक्तियां। ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत होने पर चौथी तोपखाना ब्रिगेड की इलाहाबाद में कमान संभाली। 1981 में राष्ट्रीय रक्षा कालेज में कोर्स। 33वीं कोर के ब्रिगेडियर इंचार्ज प्रशासन, 33वीं कोर में अपने सराहनीय कार्य के लिए सेनाध्यक्ष के प्रशंसा पत्र से सम्मानित। एक वर्ष के लिए दूसरी कोर में सी.सी. तोपखाना रहे। अगले वर्ष देवलाली स्थित तोपखाना स्कूल के उप–कमांडेंट बने तथा 1986 में मेजर जनरल पदोन्नत होकर मेजर जनरल तोपखाना। मध्य कमान नियुक्त मार्च 1989 को लेफ्टिनेंट जनरल पदोन्नत तथा महानिर्देशक तोपखाना के पद पर नियुक्त । 1991 में परम असाधारण कोटि की सेवाओं के लिए परम विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत। महानिर्देशक तोपखाना के पद से जून 1991 को सेवानिवृत।

लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल परम विशिष्ट सेवा मैडल एवं विशिष्ट सेवा मैडल, महानिदेशक सेना आयुध कोर (सेवानिवृत)

जन्म 2 फरवरी, 1934 नाहन (हिमाचल प्रदेश), पिता श्री शान्ति प्रसाद अग्रवाल, प्रारम्भिक शिक्षा शमशीर हाई स्कूल नाहन, मैट्रिक प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की तथा सिरमौर राज्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया। आपने इंटर साईस एवं बी. एस सी भाग–I डी. ए. वी. कालेज देहरादून से उत्तीर्ण किया। 1952 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश, 1954 में सेना आयुध कोर में कमीशन। आप रक्षा सेवा स्टाफ कालेज और राष्ट्रीय रक्षा कालेज के स्नातक हैं। अपने 36 वर्षों के विशिष्ट और लम्बे सेवा काल में इन्होंने सेना आर्डनेंस कोर के अंदर और बाहर कई प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक निभाया।

मार्च 1985 में मेजर जनरल पदोन्नत होने पर, इन्होंने सेना मुख्यालय में आर्डनेंस सेवाओं के अपर महानिदेशक (समाधात गाड़ियां) का पद संभाला। इस पद पर रहते हुए इन्होंने उपस्कर और सूची प्रबंध में विशिष्ट सुधार किए। इसके बाद दक्षिण कमान मुख्यालय में सेना आर्डनेंस कोर के मेजर जनरल के रूप में इन्होंने भारतीय शांति सेना की प्रभावी संभारिकी सहायता प्रदान की। कार्मिक सेवा के अपर महानिदेशक के पद पर रह कर इन्होंने पेंशन–मामलों के निपटान का सिंगल विंडो सिद्धांत बनाया और उसे कारगर रूप से कार्यान्वित किया।

लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल को 1 अप्रैल 1988 को उनके मौजूदा रैंक पर पदोन्नत किया गया और यहां इन्होंने सामग्री प्रबंध कालेज कमांडैंट जबलपुर का पद संभाला। इनकी इस पदावधि के दौरान, इस कालेज को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्वायत संस्था का दर्जा दिया। आप उच्चतम सैनिक शिक्षा प्राप्त अधिकारी हैं, स्टाफ कालेज कोर्स वेलिंगटन, वरिष्ठ आयुध अधिकारी (प्रबन्ध) सेना आयुध कोर स्कूल जबलपुर, रक्षा प्रबंध कालेज सिकन्दराबाद से वरिष्ठ प्रबन्धक कोर्स तथा राष्ट्रीय रक्षा कालेज नई दिल्ली से एम. फिल, आपकी योग्यताओं व उच्चकोटि की प्रबन्ध क्षमताओं के आधार पर भारतीय सामग्री प्रबन्धन संस्थान ने आपको 1990 में अपनी विशिष्ट सदस्यता प्रदान कर सम्मानित किया।

1980 में आपको सराहनीय सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया। 1991 में असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवाओं के लिए परम विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया। एक अप्रैल,1992 को सेवानिवृत हुये।

विशेष : आपके दो छोटे भाई तथा दोनों पुत्र भी थल सेना में हैं। एक छोटे भाई सेवानिवृत हैं तथा अन्य तीन सक्रिय सेवा में हैं।

कैप्टन रविन कुमार

आप लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल के बड़े सुपुत्र हैं तथा पारिवारिक परम्परा का अनुसरण करते हुए भारतीय सेना की कवचित कोर में सेवारत हैं।

कैप्टन रोहित अग्रवाल

आप लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल के छोटे सुपुत्र हैं। आप भी सेना में सेवा की शानदार परम्परा का अनुसरण कर भारतीय सेना कवचित कोर में सेवारत हैं।

कैप्टन अशोक कुमार अग्रवाल (सेवानिवृत)

जन्म 1 मई 1949, पिता लाला शान्ति प्रसाद अग्रवाल नाहन (हिमाचल प्रदेश), शिक्षा बी. ए. (आनर्स),अर्थशास्त्र, पंजाब विश्वविद्यालय से। बड़े भाई का अनुसरण करते हुए भारतीय सेना में 5 सितम्बर, 1970 को कमीशन तथा नागालैंड में नियुक्ति। 1971 के भारत–पाक युद्ध में (शकरगढ़ क्षेत्र) में सक्रिय भाग लिया। उत्तरी सिक्किम में भारतीय सेना की उच्चतम चौकीयों पर नियुक्ति। भारतीय सेना में 10 वर्ष की विशिष्ट सेवा के उपरान्त स्वेच्छा से सेवानिवृत।

आप लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र पाल अग्रवाल के छोटे भाई हैं।

मेजर जय गोपाल

जन्म 1 मई 1954 नाहन, पिता लाला शान्ति प्रसाद अग्रवाल, शिक्षा राजकीय महाविद्यालय, नाहन से स्नातक तथा इंडियन मिलिटरी अकादमी में प्रवेश। 1 दिसम्बर 1975 को जाट रेजिमेंट की 17वीं बटालियन में कमीशन। आर्मी कर्लक प्रशिक्षण स्कूल औरंगाबाद व स्पेशल फ्रंटीयर फोर्स अकादमी में प्रशिक्षक। रक्षा सेवा स्टाफ कांलेज से स्नातक। वर्तमान में आप पश्चिमी क्षेत्र में अपनी बटालियन में सेवारत हैं।

आप भी लेफ्टिनेन्ट–जनरल राजेन्द्रपाल अग्रवाल के छोटे भाई हैं।

एयर वाईस मार्शल छोटे लाल गुप्ता परम विशिष्ट सेवा मैडल (सेवानिवृत)

एयर वाईस मार्शल छोटे लाल गुप्ता को 1955 में भारतीय वायुसेना की लेखा शाखा में कमीशन प्राप्त हुआ। सेवाकाल के दौरान आपने स्टाफ, स्टेशन, कमान व वायुसेना मुख्यालय में नियुक्तियों में विशिष्टता प्राप्त की है।

वित्त क्षेत्र में अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर आपको 1980 में संयुक्त निर्देशक लेखा नियुक्त किया और बाद में एयर कोमोडोर की पदोन्नति के साथ निर्देशक लेखा नियुक्त किया गया। लगभग एक दशक से सिद्धान्त रूप से सभी महत्वपूर्ण लेखा योजनाओं के पीछे आपकी ही प्रेरणा रही है। इस प्रकार से भारतीय वायुसेना की लेखा सेवाओं के स्तर में बहुत ही शानदार सुधार हुआ है।

वित्त प्रबन्ध योजना व समन्वय के क्षेत्र में आपके अद्वितीय गुणों के कारण आपको 1984 में जब वायुसेना की पांच वर्षीय योजना (1985–90) का प्रारूप तैयार किया जा रहा था आपको निर्देशक वित्त योजना नियुक्त किया गया। आपके विभिन्न योजना–प्रारूपों के विवेकपूर्ण मूल्यांकन और जटिल पारखी गुणों के कारण वायुसेना मुख्यालय एक संतुलित योजना के प्रारूप को प्रस्तुत कर पाया।

वायु सेनां के आय बजट का आपके खर्च के निरंतर नियंत्रण व देख रेख के कारण पूर्णतः उपयोग किया गया। आपने नई तकनीकों व कार्यशैली का विकास किया है। हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड के वित्त सम्बन्धी सुझावों की जटिलता व प्रभाव को सुक्षमता से जांचा गया जिसके कारण वायुसेना को बहुत बचत हुई।

इस प्रकार एयर वाईस मार्शल छोटे लाल गुप्ता ने अत्यन्त उच्चकोटि की विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हैं।

वाईस एडमिरल सुरेन्द्रपाल गोविल परम विशिष्ट सेवा मैडल एवम्

अति विशिष्ट सेवा मैडल

ए. डी. सी., उप–नौसेना अध्यक्ष

जन्म 15 अक्तूबर 1934, जनवरी,1950 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रशिक्षण तथा नौसैनिक प्रशिक्षण के दौरान सर्वोत्तम नौसैनिक छात्र चुने गए तथा सम्मान सूचक तलवार प्राप्त की।

1 जनवरी 1955 को भारतीय नौसेना में कमीशन, सब लैफ्टिनैंट के रूप में प्रशिक्षण के लिए इंग्लैंड गए। अपनी सेवा के प्रारम्भिक वर्षों में सुरंग साफ करने वाले पोतों, विध्वंसकों तथा भारतीय नौसेना पोत मैसूर पर कार्य किया। आप संकेत व दूर–संचार के विशेषज्ञ हैं। आपने समुद्र में स्थित दूर–संचार स्कूल में तथा निदेशक नौसैनिक संकेत नौसेना मुख्यालय में भी कार्य किया है। लंदन के भारतीय उच्चायोग में नौसैनिक सलाहकार के पद पर 1966 से 1969 तक कार्य किया। एक कमांडर व कैप्टन के रूप में आपने विभिन्न पोतों पर कार्य किया। मुख्य नियुक्तियां इस प्रकार हैं:–

विध्वंसक पोत "गंगा" व फ्रिगेट "तलवार" के कप्तान, पश्चिमी नौसैनिक बेड़े के फ्लीट आपरेशन अधिकारी, नौसेनाध्यक्ष के सहायक, एक महत्वपूर्ण दूर–संचार परियोजना के निदेशक और लियेंडर श्रेणी के युद्धपोत दूनागिरी की कमान संभाली।

आप लंदन स्थित शाही रक्षा अध्ययन संस्थान से स्नातक हैं। 1982 में आप रियर एडमिरल पदोन्नत हुए तथा चीफ आफ स्टाफ पश्चिमी नौसैनिक कमान बंबई, फ्लैग आफीसर कमांडिंग पूर्वी नौसैनिक बेड़ा विशाखापतनम, सहायक नौसेना अध्यक्ष (आपरेशन्स) के पदों पर रहे। मार्च 1987 में वाईस एडमिरल पदोन्नत हुये। किला कमांडर, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों की संयुक्त कमान (देश में तीनों सेनाओं की एकमात्र संयुक्त कमान) संभाली। प्रतिष्ठापूर्ण राष्ट्रीय रक्षा कालेज नई दिल्ली के कमांडेंट। दक्षिणी नौसेना कमान, कोचीन के सेनापति नियुक्त हुये।

30 दिसम्बंर 1990 से आप उप–नौसेना अध्यक्ष के महत्वपूर्ण पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपको अति विशिष्ट व परम विशिष्ट सेवाओं के लिए 1985 में अति विशिष्ट सेवा मैडल व 1990 में परम विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया।

लेफ्टिनैंट जनरल जी. सी. अग्रवाल

महानिर्देशक भारतीय भू–सर्वेक्षण एवं
भूतपूर्व उप–कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (सेवानिवृत)

जन्म 26 जनवरी 1930, नैनीताल उत्तर प्रदेश, पिता श्री मदन गोपाल अग्रवाल। रुड़की विश्वविद्यालय से सिविल इंजीनियर, सेना की इंजीनियर कोर में 31 दिसम्बर 1951 को कमीशन। 1953 में आप को भारतीय भू–सर्वेक्षण में प्रतिनियुक्ति पर भेजा गया। जहां पर आपने सर्वेक्षण इंजीनियर का प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपनी व्यवसायिक परीक्षा में प्रथम रहे। 1962 में आपने वायु–सर्वेक्षण के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र डैल्फट हालैंड से फोटोग्रामेटरी में विशेषज्ञता प्राप्त की। 1966 में भारत व नीदरलैंड के संयुक्त कार्यक्रम भारतीय चित्र विवरण संस्थान के फोटोग्रामेटरी प्रभाग के प्रमुख बने। 1970 में इसी विभाग में अनुसंधान एवं विकास निदेशालय का गठन किया। 1981 में आपने प्रतिष्ठापूर्ण भारतीय भू–सर्वेक्षण विभाग के महानिर्देशक का पद भार ग्रहण किया। मानचित्रों के निर्माण व विकास को अत्याधुनिक बनाया व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति तक पहुंचाया। इससे संबंधित विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आप भारत सरकार के सर्वेक्षण व मानचित्रों के मामले के सलाहकार भी रहे हैं। आपने एक अत्याधुनिक उपकरण जोकि फोटो निर्माण में काम आता है का विकास एवं निर्माण किया। आपने बहुत से तकनीकी प्रकाशन भी किए हैं तथा बहुत संख्या में इन पत्रों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी सम्मेलनों में प्रस्तुत किया। आप 1 फरवरी 1988 को भारत के भू–सर्वेक्षण महानिदेशक के पद से सेवा निवृत हुए।

हरियाणा सरकार ने आपको रोहतक स्थित महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का उप–कुलपति नियुक्त किया, जहां पर आपने नये विश्वविद्यालय के निर्माण व विकास में अभूतपूर्व कार्य किया। बाद में आपने यह पद भार स्वेच्छा से त्याग दिया।

एयर मार्शल नरेश कुमार, अति विशिष्ट सेवा मैडल व वायुसेना मैडल

14 जनवरी 1956 को भारतीय वायु सेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्राप्त किया। आपने 36 वर्षों के लम्बे सेवाकाल में वायु सेना को पिस्टन इंजन से आधुनिक जैट युग में प्रवेश होते देखा है। आपने कई प्रतिष्ठापूर्ण नियुक्तियों पर सफलतापूर्वक कार्य किया है। आपको वर्ष 1969 में साहसिक कार्य के लिए वायुसेना मैडल से अलंकृत किया गया।

5 अक्तूबर 1968 को जब आप उत्तरी बंगाल के एक बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में एक हैलीकाप्टर इकाई की कमान पर रहे थे। आपने बड़े साहस के साथ 9 व्यक्तियों की निश्चित मृत्यु से रक्षा की। एक ऐसे ही बचाव अभियान के समय उसी दिन शाम को एक हैलीकाप्टर में सह–चालक के रूप में उड़ान भरते हुए आपने बाढ़ में घिरे लोगों के एक दल को देखा जोकि साक्षात खतरे में था। उन्हें तुरंत सहायता की आवश्यकता थी। यह गोधूलि वेला थी तथा दृष्यता भी काफी कम थी। स्कवाड्रन लीडर नरेश कुमार ने जो स्वयं उस इकाई के कमान अधिकारी थे अपने चालक को बचाव कार्य करने का आदेश दिया। क्योंकि हैलीकाप्टर का पानी में उतरना असम्भव था। हैलीकाप्टर कुछ इंच ऊपर ही उड़ाते रखा गया। बाढ़ से घिरे हुए लोग इतने कमजोर हो चुके थे कि, वे हैलीकाप्टर में भी नहीं चढ़ सकते थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करते हुए आपने स्वयं पानी में कूद कर तीन लोगों को हैलीकाप्टर में चढ़ा कर उनकी रक्षा की। इसी प्रकार से इन्हीं परिस्थितियों में 6 अक्तूबर को कुछ और लोगों की भी रक्षा की।

अपने इस व्यक्तिगत साहसपूर्ण कार्य के अतिरिक्त उड़ानों के प्रभारी अधिकारी के नाते आपने बाढ़ के समय हवाई सहायता व बचाव योजनाओं का कार्य पूरा किया। यह आपकी उच्चकोटि की योजना का ही परिणाम था कि

14 दिनों में 650 टन भोजन व अन्य राहत सामग्री को हैलाकाप्टरों द्वारा गिराया व 1400 लोगों को बाढ़ से बचाया जा सका। जिसमें 34 लोग तो निश्चित ही मरणामन्न थे। आपके इस साहस एवं असाधारण निष्ठापूर्ण कर्तव्य पालन के लिए भारत के राष्ट्रपति ने आपको वायुसेना मैडल से अलंकृत किया।

पुनः आपको 1988 में जब आप एयर कामोडोर के पद पर एक वायु सेना स्टेशन वायु कमान अधिकारी थे। आपको असाधारण कोटि की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अति विशिष्ट सेवा मैडल से राष्ट्रपति द्वारा अलंकृत किया गया।

आपका स्टेशन जोकि बहुत ऊंचाई पर स्थित था एवं परिवहन विमानों व हैलीकाप्टरों की उड़ानों का आधारभूत मुख्य केन्द्र था। जिसके उत्तरदायित्व में सायचिन गलेशियर क्षेत्र में तैनात सैन्यबलों को सामान की आपूर्ति तथा घायलों के बचाव का अत्यन्त कठिन कार्य था। आपने अपने अधिनस्थों को भी उत्साह के साथ एकाग्रचित हो कर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आपकी कमान में सभी सौंपे गए कार्यों को प्रतिकूल मौसम में उच्च स्थिति तथा सीमित साधनों जैसी बाधाओं को बावजूद भी सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

इसके अतिरिक्त आपने लड़ाकू विमान नियंत्रक का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने विभिन्न प्रकार के वायुयानों व हैलीकाप्टरों को उड़ाया है। आपने राष्ट्रीय रक्षा कालेज नई दिल्ली से भी प्रशिक्षण प्रप्त किया है। अफगानिस्तान में आप एयर–अटैची भी रहे हैं। एयर वाइस मार्शल पदोन्नत होने पर आपको एक बड़ी वायु (प्रहार) कमान में वरिष्ठ प्रशासकीय प्रभारी नियुक्त किया गया एवं जम्मू कश्मीर क्षेत्र के वायु कमान अधिकारी भी रहे।

11 अप्रैल, 1991 को एयर मार्शल बने आप हैलीकाप्टर शाखा के इस पद पर पहुंचने वाले प्रथम अधिकारी हैं। आपने प्रतिष्ठापूर्ण एयर आफिसर प्रशासन वायुसेना मुख्यालय दिल्ली का पदभार ग्रहण किया। 14 अक्तूबर 1991 को एयर आफीसर पर्सनल का भी पदभार संभाला। मई 1992 से आप केन्द्रीय वायु कमान में वरिष्ठ एयर स्टाफ आफीसर के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

रियर एडमिरल संतोष कुमार गुप्ता, महावीर चक्र एवं नौसेना मैडल

सह–नौसेनाध्यक्ष (वायु), (सेवानिवृत)

जन्म 21 दिसम्बर 1936 देहरादून, पिता सेठ हरिकिशोर, शिक्षा दून स्कूल से। 1953 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश। 1 जनवरी 1958 को भारतीय नौसेना में कमीशन तथा लड़ाकू विमान चालक बने।

11 अक्तूबर 1966 को जब आप भारतीय नौसेना के विमान वाहक पोत विक्रान्त पर कार्यरत थे। आप एक वायु युद्ध का अभ्यास करने के उपरान्त अपने सी–हाक लड़ाकू विमान में विमान वाहक पोत पर उतर रहे थे कि उसको रोकने की तार प्रणाली टूट गई तथा विमान की हुक भी अलग हो गई। विमान की गति भी काफी थी तथा विमान पोत पर बिना उतरे पानी की ओर बहुत ही भयंकर कोण से चला गया विमान की ऊंचाई भी तेजी से कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थिति में सामान्यतः विमान को छोड़ दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप विमान नष्ट हो जाता है। परन्तु लेफ्टिनेंट गुप्ता ने इस संकट की विकट घड़ी में धैर्य व स्थिर बुद्धि को नहीं खोया तथा अत्यन्त ही कौशल व साहस के साथ विमान को पुनः ऊपर उठाया और निकट के विमान क्षेत्र में सुरक्षित उतार लिया। इस अधिकारी ने इस प्रकार शान्तचित हो साहस के साथ नौसेना की शानदार परम्पराओं के अनुसार उच्चकोटि की वैमानिक कुशलता का परिचय दिया तथा राष्ट्रपति द्वारा नौसेना मैडल से अलंकृत हुये।

1971 के भारत पाक युद्ध में लेफ्टिनेंट कमांडर संतोष कुमार गुप्ता भारतीय नौसेना के हवाई स्कवाड्रन की कमान में थे और विमानवाही जहाज आई. एन. एस. विक्रान्त से संक्रामक कार्यवाही कर रहे थे। इन्होंने बमबारी की ग्यारह उड़ानों का बड़ी सफलता से नेतृत्व किया। जिसके फलस्वरूप शत्रु के पोतों को भारी नुकसान पहुंचा और बंगलादेश के अनेक सैक्टरों में दुश्मन के मजबूती से रक्षित अनेक तटवर्ती संस्थान बर्बाद हो गए। 9 दिसम्बर 1971

को लेफ्टिनेंट कमांडर गुप्ता ने सी–हाक वायुयानों से खुलना में शत्रु के ठिकानों पर ठीक निशानों पर सफल बमबारी की, जहां शत्रु की विमानभेदी तोपें दनादन गोले बरसा रही थीं। इनके विमान पर एक गोला लगा और इससे इनका यान क्षतिग्रस्त हो गया। लेकिन फिर भी अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुए भारी खतरा उठा कर लेफ्टिनेंट कमांडर गुप्ता अदम्य संकल्प और बड़ी दक्षता से हमले का नेतृत्व करते रहे और इसके बाद अपनी डिवीजन को जहाज पर सुरक्षित लौटा लाए। लेफ्टिनेंट कमांडर गुप्ता ने अपने क्षतिग्रस्त यान को विमानवाही पोत पर सुरक्षित उतारने में महान साहस और सैनिक योग्यता का परिचय दिया। शेष कार्यवाहियों में भी लेफ्टिनेंट कमांडर गुप्ता ने हर अवसर पर बन्दरगाहों और तटीय संस्थानों और शत्रु के जहाजों पर हमला करने में अपने स्कवाड्रन का नीचे से भारी गोलीबारी के बावजूद, सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। जिसके फलस्वरूप शत्रु एकदम अपंग हो गया और इससे चालना, खुलना और चटगांव क्षेत्र में शत्रु का विरोध कामयाबी से समाप्त करने में मदद मिली।

आपके आक्रमणों ने पाकिस्तान के बहुत बड़े शस्त्र भंडारो को समाप्त किया तथा उनका मनोबल गिराया। इस सभी संक्रियाओं में लेफ्टिनेंट कमांडर गुप्ता ने विशिष्ट वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया। राष्ट्रपति द्वारा महावीर चक्र से अलंकृत तथा आप नौसेना की वायुशाखा के प्रथम व आज तक एक मात्र महावीर चक्र विजेता हैं। युद्ध समाप्ति के उपरान्त जन–साधारण व नागरिक संगठनों द्वारा आपका नागरिक अभिनन्दन किया गया। जिस क्षेत्र को आपने पाकिस्तान सेना पर गोली बारी कर उसे मुक्त कराया था। युद्ध के पश्चात् वहां के स्थानीय लोगों ने भी आपका बहुत सम्मान किया। पूर्वी कमान के तत्कालीन सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, वाईस एडमिरल कृष्णन तथा एयर मार्शल हरीचन्द दीवान पूर्वी कमान के इन तीनों सेनापतियों ने स्वयं विक्रान्त पर आकर आपका अभिनन्दन किया। मद्रास में भी आपके दल का शानदार नागरिक अभिनन्दन किया गया। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैं:–

अक्तूबर, 1973 से मई 1975 तक आप एक सुरंग साफ करने वाले स्कवाड्रन के कमान अधिकारी रहे। 1 मई 1975 से 31 दिसम्बर 1976 तक नौसेना अकादमी के कमान अधिकारी। जनवरी 1977 से फरवरी 1978 तक विक्रान्त के वायु–विभाग के प्रभारी अधिकारी। फरवरी 1978 से अप्रैल, 1979 तक एक अन्य पोत के कमान अधिकारी। अप्रैल 1979 से जुलाई 1981 तक नौसेना के प्रतिष्ठापूर्ण वायु केन्द्र गोवा के कमान अधिकारी। जुलाई 1981 से 2 अक्तूबर 1984 तक ब्रिटेन के भारतीय उच्चायोग में नौसैनिक अटैची तथा भारतीय नौसेना के लिए प्रथम सी–हेरीयर विमान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया। नवम्बर 1984 से मार्च 1986 तक उस समय के एकमात्र विमानवाहक पोत विक्रान्त के कमान अधिकारी रहे।

मार्च 1986 में नौसेना की वायुशाखा के सर्वोच्च पद सहायक नौसेनाध्यक्ष (वायु) बने। इसी पद से 31 दिसम्बर 1990 को सेवानिवृत।

विशेषः आपके पिता स्व. सेठ हरिकिशोर देहरादून के प्रसिद्ध जागीरदार थे तथा विमान चालक भी थे। उन्होंने 1940 से पूर्व करांची से देहली तक हुई विमान दौड़ में ट्राफी प्राप्त की थी।

श्री जय लाल गुप्ता कीर्ति चक्र
सहायक इलैक्ट्रिकल इंजीनियर

पुंछ बिजली घर को पानी पहुंचाने वाली पुंछ हायडल नहर, जो पाकिस्तानी अधिकृत कश्मीर से बहकर आती है, 25 अक्तूबर, 1963 को पाकिस्तानियों ने तोड़ दी। जिससे पुंछ सीमा पर स्थित शहर में बिजली बन्द हो गई। 30 अक्तूबर, 1963 को पुंछ के असिस्टेन्ट इलैक्ट्रिकल इंजीनियर, श्री जय लाल गुप्ता की निगरानी में युद्ध विराम रेखा के इस पार दूसरी नहर बनाने के काम में बहुत संख्या में असैनिक श्रमिक लगाए गए, परन्तु पाकिस्तानी सेना की निरन्तर गोलीबारी के फलस्वरूप उस काम को छोड़ना पड़ा। पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी से अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किए बिना श्री गुप्ता पुंछ हायडल चेनल के इंचार्ज, श्री हेम राज तथा दलान गांव के सरपंच गुलाम दीन के साथ अपने आदमियों को फिर वहां लेकर गए और दूसरी नहर बना दी। जब तक सारा काम खत्म नहीं हो गया और सारे मजदूर सुरक्षित वापिस नहीं चले गए तब तक श्री गुप्ता उस स्थान से नहीं लौटे। श्री जय लाल गुप्ता के उत्कृष्ट साहस तथा कर्तव्यनिष्ठा के फलस्वरूप ही काम समाप्त हुआ और थोड़े समय में ही उस शहर में पुनः बिजली की व्यवस्था की जा सकी।

आपके इस अद्वितीय साहस के लिये राष्ट्रपति ने आपको कीर्ति चक्र से अलंकृत किया।

ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग कीर्ति चक्र व अति विशिष्ट सेवा मैडल (सेवा निवृत)

जन्म 19 अगस्त, 1928, जीन्द (हरियाणा), पिता स्व. श्री नाथू लाल गर्ग, 1947 में विज्ञान स्नातक तथा 1951 में यांत्रिक इंजीनियर। 27 जुलाई, 1952 को भारतीय सेना की कोर आफ ई.एम. ई. में कमीशन सेना में अपनी उच्चकोटि की सेवाओं के लिए आपको अति विशिष्ट सेवा मैडल से राष्ट्रपति द्वारा अलंकृत किया गया। आपने विभिन्न पदों पर अत्यंत योग्यतापूर्वक कार्य किया। अति विशिष्ट सेवा मैडल के वाचन का उल्लेख इस प्रकार है :-

"ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग को 1952 में विद्युत एवं यांत्रिकी कोर में स्थाई कमीशन प्रदान किया गया, आप भारतीय इंजीनियरिंग संस्थान के भी सदस्य हैं, 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय आप पूर्वी क्षेत्र में नियुक्त थे, आपने डिवीजन, कमांड व सेना मुख्यालय में विभिन्न पदों पर कार्य किया है। आपने तीन अलग-अलग सैनिक बेस वर्कशापों में उत्पादन व कार्य प्रबन्धन का कार्य किया है, आपके कार्यकाल में ही इन कार्यशालाओं में सीमित साधनों से ही अधिक क्षमता का कार्य किया गया, आपने ही इन कार्यशालाओं में नये प्रशासनिक व तकनीकी ढंगों का विकास किया।

आपका रक्षा शोध एवं विकास संगठन में चयन हुआ और लेफ्टिनेंट कर्नल पदोन्नत हुये तथा 1964 में मंसूरी स्थित रक्षा कार्य अध्ययन संस्थान के उप-निदेशक व मुख्य प्रशिक्षक नियुक्त हुये। इस संस्थान में जिसके आप स्थापक सदस्य रहे हैं और लगभग सात वर्ष तक कार्य किया है, में आपने प्रबंध व कार्य अध्ययन के प्रशिक्षण की योजनाओं में अपेक्षित कार्य किया। बाद में रक्षा प्रबन्धन संस्थान में आपूर्ति प्रबन्धन के विभागाध्यक्ष पद पर चयन हुआ एवं भारतीय मानक संस्थान में सैनिक सदस्य नामांकित, ब्रिगेडियर गर्ग 1974 से सेना मुख्यालय के जनरल स्टाफ शाखा के कार्य अध्ययन सैल में कार्यरत हैं। कार्य अध्ययन के निदेशक के रूप में आपने अपने अध्ययन दलों की विभिन्न क्षेत्र में प्रशासकीय कार्यकलापों, साज समान शोध प्रबन्ध व तकनीकी संगठनात्मक अध्ययन के लिए निर्देशित किया जोकि समस्त थल सेना के कार्यों का केन्द्र रहा है। आपका सीमित व महंगे साधनों के सदुपयोग के सुचारू उपायों का लागू करने व बड़ी

बचत करने में सराहनीय योगदान रहा है। इस प्रकार से ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग ने उच्च कोटि की अति विशिष्ट सेवा की है।

31 अगस्त, 1980 को आप सेना से सेवानिवृत हुए तथा भोपाल स्थित सट्रा प्रोडक्टस लिमिटेड नामक निजी संस्थान में महाप्रबन्धक का कार्य भार संभाला। आपने सेना में तो अपने कार्यों से ख्याति व अति विशिष्ट सेवा मैडल प्राप्त किया ही तथा इस परम्परा का नागरिक जीवन में भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत कर निर्वाह किया तथा देश के दूसरे सर्वोच्च वीरता पुरस्कार कीर्ति चक्र से अलंकृत हुए। अपने प्राणों पर खेल कर 1984 में भोपाल में हुए भयानक गैस कांड में सैंकड़ों लोगों के प्राणों की रक्षा की तथा पूरे देश में यश प्राप्त किया तथा प्रशंसा का केन्द्र बने। भोपाल के नागरिकों व राज्य सरकार ने न केवल उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया अपितु कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया।

भारत के राष्ट्रपति ने आपको इस अभूतपूर्व वीरता, साहस व दृढ़ता के लिए 11 अप्रैल, 1987 को कीर्ति चक्र से राष्ट्रपति भवन में हुए रक्षा अलंकरण समारोह में अलंकृत किया।

कीर्ति चक्र का वाचन इस प्रकार है :–

मध्यप्रदेश के भोपाल शहर में 2/3 दिसम्बर, 1984 की आधी रात में जहरीली गैस के फैलने की भयानक दुर्घटना हुई थी जिसमें हजारों परिवारों के कई लोग मारे गए और बहुत गम्भीर रूप से घायल हुए। दुर्घटना स्थल से केवल 400 गज की दूरी पर स्थित सट्रा प्रोडक्टस फैक्टरी के महाप्रबन्धक ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग अति विशिष्ट सेवा मैडल (सेवानिवृत) फैक्टरी के उन 1100 कर्मचारियों में थे जो उस रात जहरीली गैस की चपेट में आ गए थे। ब्रिगेडियर गर्ग अपनी तथा अपने परिवार के जीवन की रक्षा की परवाह किए बिना सारी रात भर तब तक बचाव कार्य में लगे रहे जब तक कि सभी घायल व्यक्तियों को सैनिक व नागरिक अस्पतालों में भर्ती नहीं कर दिया गया।

ब्रिगेडियर गर्ग ने इस तरह जहरीली गैस से घायल कई लोगों की जानें बचाई। ये खुद एक घंटा पैंतालीस मिनट तक इस जहरीली गैस में सांस लेते रहे जिससे इनकी हालत बहुत नाजुक हो गई थी लेकिन फिर भी बचाव कार्य के लिए बराबर टेलीफोन करते या सुनते रहे। लोगों को अस्पतालों में पहुंचाने के लिए समुचित व्यवस्था करने के बाद ये कर्मचारियों की आवासीय कालोनी में गए और अधिक से अधिक लोगों को अपनी कार में बिठाया और स्वयं कार चलाकर उन्हें सैनिक अस्पताल पहुंचाया। इन्होंने आक्सीजन लेने के बारे में डाक्टरों की राय केवल तब मानी जब उन्हें विश्वास हो गया कि अब बचाव कार्य पूरा हो गया है।

इस प्रकार ब्रिगेडियर मनोहर लाल गर्ग ने अदम्य साहस अपने कर्मचारियों तथा उनके परिवारों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता, कारगर नेतृत्व, दृढ़ता और जहरीली गैस के फैलने की उस भयानक दुर्घटना के समय गहरी सूझबूझ का परिचय दिया।

मेजर जनरल रविन्द्र गुप्ता अति विशिष्ट सेवा मैडल एवं बार (सेवानिवृत)

जन्म 8 सितम्बर 1929 आगरा उत्तर प्रदेश, पिता स्व. लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता जोकि उत्तर प्रदेश के ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद थे। आप बिजनौर के स्व. राजा ज्वाला प्रसाद जोकि 1930 में उत्तर प्रदेश के प्रथम भारतीय मुख्य अभियंता बने थे के परिवार से हैं। आपके परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री धर्मवीर आई. सी. एस. भूतपूर्व राज्यपाल, पंजाब, पश्चिम बंगाल व कर्नाटक हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक बनने के उपरान्त जुलाई 1949 में भारतीय सैनिक अकादमी देहरादून में प्रवेश लिया 10 जून 1951 को भारतीय सेना की "सेना सेवा कोर" में कमीशन। आप रक्षा सेवा स्टाफ कालेज वेलिगंटन के स्नातक हैं तथा 1976 में महू स्थित कालेज आफ काम्बेट से उच्च कमान प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।

आपने अपने सेवाकाल में विभिन्न प्रतिष्ठापूर्ण रेजिमेंटल स्टाफ व प्रशिक्षक नियुक्तियों का पालन किया है। आपको उच्च कोटि की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 1980 में अति विशिष्ट सेवा पदक से राष्ट्रपति द्वारा अलंकृत किया गया तथा पुनः 1985 में अति विशिष्ट सेवा पदक से अलंकृत किया गया। इस प्रकार आपको सेना सेवा कोर के दो बार इस सम्मान को प्राप्त करने वाले प्रथम व आज तक एकमात्र अधिकारी होने का गौरव प्राप्त है। अति विशिष्ट सेवा मैडल एवं बार का वाचन उल्लेख इस प्रकार हैः—

1970 में लेफ्टिलेंट कर्नल पदोन्नत होने पर आपने एक आपूर्ति बटालियन की कमान पश्चिमी क्षेत्र में संभाली। 1971 के भारत–पाक युद्ध में आपने अपनी डिवीजन की आपूर्ति व्यवस्था अत्यन्त प्रभावी ढंग से संभाली। 1973 में पुनः आपको एक पैदल डिवीजन का सहायक एडजूटेंट एवं क्वार्टर मास्टर जनरल नियुक्त किया गया। जहां पर आपने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। 24 दिसम्बर 1976 को कर्नल पदोन्नत हुये तथा निर्देशक अनुशासन एवं सर्तकता नियुक्त हुये। इस संवेदनशील नियुक्ति में अत्याधिक बुद्धि कौशल, परिपक्वता एवं निष्पक्षता का परिचय दिया जिसके कारण मामलों का निष्पक्ष व शीघ्र निपटारा संभव हो पाया। इस उत्कृष्ट सेवा के लिए आपको राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया। अक्तूबर, 1980 में आप एक कोर मुख्यालय में आपूर्ति एवं परिवहन के उप–निदेशक नियुक्त किए गए। एक प्रभावी योजनाकार होने के कारण आपने अपनी फार्मेशन के पूर्वी क्षेत्र के दुर्गम व दूर–दराज के क्षेत्रों में आपूर्ति व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाया। जून 1983 में मेजर जनरल पदोन्नत होकर आपने उत्तरी कमान के मेजर जनरल आपूर्ति का कार्यभार संभाला। इस नियुक्ति में आपने सियाचिन जैसे दुर्गम क्षेत्र में तैनात सैन्य बलों की आपूर्ति व्यवस्था को अपने कौशल दूरदर्शिता एवं प्रशासकीय योग्यता के बल पर सुनियोजित किया। इस प्रकार से मेजर जनरल रविन्द्र गुप्ता अ.वि.से.मै. ने उच्च कोटि की उत्कृष्ट सेवाएं की हैं।

1985 में सेवा निवृत।

मेजर जनरल छज्जू राम अति विशिष्ट सेवा मैडल व वीर चक्र

(सेवानिवृत)

जन्म 22 मार्च 1920 दडौली खुर्द जिला जालंधर, पिता डा. मूलराज, शिक्षा डी. ए. वी. कालेज जालंधर से बी.ए., 1940 में तथा 1943 में आफीसर ट्रेनिंग स्कूल बंगलौर में तथा स्कूल आफ आर्टिलरी देवलाली में प्रशिक्षण 1944 में तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन व दूसरी फील्ड रेजिमेंट में प्रवेश, द्वितीय विश्व युद्ध में बर्मा के मोचे पर सक्रिय भाग तथा जापान के साथ युद्ध के समाप्त होने तक बर्मा में ही रहे। 1947–48 में गनरी स्टाफ कोर्स, 1948 से 1950 तक, स्कूल आफ आर्टिलरी देवलाली में प्रशिक्षक, 1951–52 में वेलिगंटन में स्टाफ कालेज, 1957 तक ब्रिगेड मेजर, 1958–60 में एक नई डिविजन लोकेटिंग बैटरी का गठन व कमान, 1960–62 तक लद्दाख में 121 वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड में ब्रिगेड मेजर, 1963–64 तक 5वीं फील्ड रेजिमेंट की कमान, 1965–66 तक दूसरी कोर में तथा 1965 के भारत–पाक युद्ध में वीरता के लिए वीर चक्र से अलंकृत।

6 सितम्बर 1965 की सुबह पाकिस्तान के डेरा बाबा नानक क्षेत्र में हमारी सेनाओं ने आगे बढ़कर शत्रु का पुल नष्ट कर दिया। शत्रु कुछ जानी नुकसान उठाने के बाद पुल को उड़ाए बिना ही पीछे हट गया और हमारी सेनाओं ने पुल के दक्षिणी किनारे पर कब्जा कर लिया। दोपहर को शत्रु ने मीडियम टैंकों और तोप खाने की सहायता से पुल पर भारी जवाबी हमला किया और हमारी अगली दो कम्पनियों को रौंद कर आगे बढ़ गया तथा बड़ी गम्भीर स्थिति पैदा हो गई। तब लैफ्टिनेंट

कर्नल हरगुलाल, अति विशिष्ट सेवा मैडल एवं ताम्र पत्र (सेवानिवृत)

जन्म 6 दिसम्बर, 1924 गांव बेरी तहसील झज्जर जिला रोहतक (हरियाणा)। 1939 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर देहली के श्रीराम कालेज आफ कामर्स से बी. काम. की परीक्षा उत्तीर्ण कर देहली विश्वविद्यालय से कानून की परीक्षा पास की।

कर्नल हरगुलाल भारतीय सेना के गिने चुने अधिकारियों में से एक हैं जो पहले स्वतन्त्रता सेनानी व बाद में सैनिक अधिकारी रहे। आप स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय सक्रिय रूप से आन्दोलनों में भाग लेने के कारण भारतीय सुरक्षा अधिनियम की धारा 129 के अनुसार मुलतान (पाकिस्तान) की पुरानी केंद्रीय जेल में रखे गए। आपको बापरौदा गांव से पकड़ा गया तथा निष्कासित कर दिया गया।

देश के स्वतन्त्र होने पर 1948 के अक्तूबर माह में आफीसर ट्रेनिंग स्कूल पूणे में जेन्टल मैन कैटेड भर्ती हुये। 30 अप्रैल, 1949 को भारतीय थल सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन, कांगों में भारतीय शांति सेना के साथ गए तथा दुर्गम स्थलों में भारतीय सेना के तोपखाने की कमान। 1971 के भारत–पाक युद्ध में आपको उत्कृष्ट सेवाओं के लिए भारत के राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया।

आप पश्चिमी कमान मुख्यालय में प्रथम श्रेणी के स्टाफ अधिकारी थे। आपको सेना मुख्यालय नई दिल्ली में सहायक क्वार्टर मास्टर (आपरेशन्स व योजना) के पद पर भेजा गया। 1971 के भारत–पाक युद्ध के समय आप कर्नल (जनरल स्टाफ) एक पैदल डिवीजन में थे। जहां पर आपने पश्चिमी क्षेत्र में क्षेत्रों के हस्तांतरण संबंधी कार्य को अत्यन्त योग्यता पूर्वक पूरा किया। आपको मार्च 1973 में सेना मुख्यालय में उप–निदेशक (संगठन) नियुक्त किया गया जहां पर आपने युद्ध विधवाओं के अपने मृतक पति की जायदाद संबंधी आवेदनों का नई प्रणाली बना कर बहुत ही थोड़े समय में निपटारा किया।

आपने आय–कर तथा विभिन्न नागरिक अधिकारियों से निरंतर व्यक्तिगत सम्पर्क कर इस कार्य को सुगम किया। आपने इस कार्य के प्रति समर्पित भावना के गुणों के कारण व मानवीय आधार पर एक रिकार्ड समय में सभी मृतक अधिकारियों के जायदाद संबंधी मामलों को सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

अपने सेवाकाल के दौरान कर्नल हरगुलाल ने-उच्च कोटि की असाधारण सेवा की। आपको 1972 में स्वतंत्रता के 25 वर्ष पूरे होने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा आपके स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर ताम्र पत्र से सम्मानित किया गया जो कि भारतीय सेना में एक दुर्लभ उदाहरण है।

मेजर जनरल गोपाल दास, अति विशिष्ट सेवा मैडल
(सेवानिवृत)

जन्म 1 फरवरी, 1928 सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, पिता लाला दामोदर दास । 31 दिसम्बर, 1951 को भारतीय सेना की सिगनल कोर में कमीशन तथा रुड़की विश्वविद्यालय से विद्युत अभियांत्रिकी के स्नातक । आप भारतीय इंजीनियर संस्थान के भी सदस्य हैं। आपने अपने सेवाकाल में विभिन्न व्यवसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को पूरा किया, जिसमें इंगलैंड के स्कूल आफ सिग्नलस कैट्रीक में प्राप्त किया तकनीकी पाठ्यक्रम भी है। आपने कम्प्यूटर कार्यक्रमों में भी विशेषज्ञता प्राप्त की है।

आपने 1978 से विविध महत्वपूर्ण कमान स्टाफ व प्रशिक्षक नियुक्तियों का निर्वाह किया है। आप सेना मुख्यालय के इलैक्ट्रानिक डाटा प्रोसैसिंग केन्द्र के कमांडेंट भी रहे हैं। जहां पर आपने प्रबन्धकीय सूचना प्रणाली का विकास करा तथा सेना मुख्यालय में कम्प्यूटर संबंधी कार्यों का उत्तरदायित्व निभाया।

आपके सेवाकाल में एक आधुनिक कम्प्यूटर को लगाया गया। उसको लगाने में आपने सेवाओं में इसके सदुपयोग के लिए असाधारण कर्तव्यनिष्ठा एवं एकाग्रचित हो कर कार्य किया। इस नए कम्प्यूटर के लगने से सेना मुख्यालय से विभिन्न निदेशालयों व शाखाओं की कार्य क्षमता का सुधार हुआ। इस प्रकार से मेजर जनरल गोपालं दास ने उच्च कोटि की उत्कृष्ट सेवा प्रदान की। राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत, 31 जनवरी, 1982 को सेवानिवृत।

मेजर जनरल सुरेन्द्र नाथ, अति विशिष्ट सेवा मैडल एवं विशिष्ट सेवा मैडल (सेवानिवृत)

जन्म 16 सितम्बर, 1933, 1949 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1950 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश। दिसम्बर 1953 में थल सेना की प्रसिद्ध राजपूताना राइफल्स में कमीशन प्राप्त किया। कांगों में भेजी गई भारतीय शांति सेना के सदस्य थे। आपकी महत्वपूर्ण उपलब्धियां व नियुक्तियां इस प्रकार हैं।

1982 में राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया।

आप रक्षा सेवा स्टाफ कालेज के स्नातक हैं, आपने आंतरिक सुरक्षा के लिए नागालैंड में आतंकवादियों के विरुद्ध एक बटालियन की सफलता पूर्वक कमान की। जिसके कारण आपको विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत किया गया। आपने 1971 के भारत–पाक युद्ध में शकरगढ़ क्षेत्र में अपनी बटालियन का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया। आपको कालेज आफ काम्बेट महू में प्रथम श्रेणी जी. एस. ओ. तथा प्रथम श्रेणी प्रशिक्षक नियुक्त किया गया। 1975 में आपको राजपूताना राइफल्स सेंटर का कमांडेंट नियुक्त किया गया। 1977 में ब्रिगेडियर पदोन्नत हुये तथा पूर्वी क्षेत्र में एक ब्रिगेड की कमान संभाली। 1980–81 में इन्फैन्ट्री स्कूल महू के कमाडेंट रहे। फरवरी, 1981 में भारतीय सैनिक अकादमी देहरादून के उप कमांडेंट व मुख्य प्रशिक्षक बने। जहां पर आपने प्रशिक्षण के स्तरों में चहुंमुखी सुधार किया तथा नई तकनीकों व कौशल का विकास किया। 1982 में भारतीय सैनिक अकादमी के स्वर्ण जयंती समारोह की सफलता का आंशिक श्रेय भी आपको है। इस प्रकार से आपने उच्च कोटि की असाधारण सेवा की है।

मार्च, 1983 में मेजर जनरल पदोन्नत हुये तथा आसाम में नागरिक अधिकारियों की सहायता के लिए एक डिवीजन की कमान संभाली। 1985–87 तक महाराष्ट्र व गुजरात क्षेत्र के जनरल आफीसर कमांडिंग रहे। दिसम्बर 1987 में सेना मुख्यालय में प्रोवोस्ट मार्शल (सेना पुलिस के मुखिया) के पद से 30 सितम्बर 1989 को सेवानिवृत हुये।

आप राजपूताना राईफल्स के कर्नल कमांडेंट भी रहे हैं।

एयर कोमोडोर अविनाश चन्द्र गोयल, अति विशिष्ट सेवा मैडल

जन्म मियांवाली, जिला भाकर (उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान), पिता श्री पी. एल. गोयल, शिक्षा दिल्ली से हायर सैकेण्डरी एवं राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से स्नातक। 26 मई 1962 को भारतीय वायु सेना की उड़ान शाखा में कमीशन एक कुशल लड़ाकू विमान चालक के रूप में 2000 घंटों से भी अधिक की दुर्घटना रहित उड़ान का मिग–21 विमान पर अनुभव तथा विभिन्न पदों पर नियुक्तियां। 1986 में उच्चकोटि की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत, आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां व उपलब्धियां इस प्रकार हैं :–

वायुसेना के नं. 8 स्कवाड्रन के आप फ्लाईट कमांडर रहे, पूर्वी वायु कमान मुख्यालय में आपरेशन्स आई ए रहे। 2208 स्कवाड्रन वायु सेना के कमान अधिकारी तथा अग्रिम क्षेत्र आपूर्ति इकाई के कमान अधिकारी रहे। यह स्टेशन मिग विमानों व भूमि से वायु में प्रहार करने वाले प्रेक्षपास्त्रों से सज्जित था। आपकी कमान में पूरे पश्चिमी वायु कमान में यह स्टेशन सर्वश्रेष्ठ रहा तथा ट्राफी प्राप्त की। अपनी दूसरी कमान अवधि के बाद मंत्रिमंडल सचिवालय के सैनिक स्कन्ध में रक्षामंत्री सेनाध्यक्षों एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से संबंधित वरिष्ठतम समितियों के सचिव के रूप में कार्य किया जिसमें बड़े आपरेशनल, वैयक्तिक एवं संवेदनशील कार्यों को कुशलता पूर्वक पूरा किया।

आपने तीनों सेनाओं से संबंधित स्टाफ के समन्वय का संचालन किया। इस प्रकार आपने उच्चकोटि की उत्कृष्ट सेवा की है। अक्तूबर, 1985 से मार्च, 1988 तक 54वीं सिग्नल इकाई वायुसेना के कमान अधिकारी रहे। वायु कमान अधिकारी मुख्यालय जम्मू व कश्मीर क्षेत्र में वरिष्ठ वायु स्टाफ अधिकारी रहे।

आजकल आप 36वीं विंग वायुसेना के वायु कमान अधिकारी हैं।

ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन, अति विशिष्ट सेवा मैडल (सेवानिवृत)

अपने सैन्य सेवा काल में ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन ने विभिन्न नियुक्तियों को उत्कृष्टता से निभाया।

ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन को 3 नवम्बर, 1987 में मिलिटरी हस्पताल मेरठ में कमांडेंट के रूप में तैनात किया गया। इस अवधि के दौरान उन्होंने कड़ी मेहनत, ड्यूटी के प्रति निष्ठा और दूरदर्शिता से अस्पताल के कामकाज में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। ये अस्पताल परिसर में एक पॉलीक्लीनिक स्थापित करवाने में सफल हुए, जिसकी लम्बे समय से जरूरत महसूस की जा रही थी पर साधनों की कमी से रुकावट हो रही थी। अपनी सूझबूझ और दूरदर्शिता से इन्होंने सभी कठिनाइयों पर काबू पा लिया और अस्पताल में ऐसा संस्थान स्थापित करवाने में सफल रहे जो हमेशा जरूरतमंदों को व्यापक स्तर पर तात्कालिक और बढ़िया स्वास्थ्य सेवा प्रदान करेगा। प्रतिदिन नियत घंटों के लिए सभी बीमारियों के विशेषज्ञ रोगियों को सलाह देने तथा उपचार करने के लिए उपलब्ध रहते हैं। यदि यह संस्थान न होता तो रोगियों को सलाह, जांच और उपचार के लिए एक विभाग से दूसरे में, एक बिल्डिंग से दूसरी में भागना पड़ता।

मिलिटरी अस्पताल, मेरठ में बाल चिकित्सा गहन चिकित्सा कक्ष की स्थापना ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन की लगन और दूरदर्शिता का एक और सबूत है। 10 बिस्तरों वाला बाल चिकित्सा कक्ष पूरी तरह से आधुनिक उपकरणों से सज्जित है और यहां गम्भीर रूप से बीमार व घायल बच्चों को हर संभव गहन चिकित्सा सेवा प्रदान की जा सकी है। मिलिटरी अस्पताल, मेरठ का परिवार कल्याण केन्द्र बहुत अच्छा बना है। इस केन्द्र के काम करने के ढंग को इतना सरल और कारगर बनाया गया है कि एक गांव की अनपढ़ औरत को भी कोई कठिनाई नहीं होती। अब ये अफसर सेवानिवृत हो चुके हैं।

इस प्रकार ब्रिगेडियर सुरेन्द्र कुमार जैन ने अति असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा की है।

स्व. विंग कमांडर सतीश नंदन बंसल, वीर चक्र

चित्र : स्व. राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन् विंग कमांडर बंसल को वीर चक्र प्रदान करते हुए।

जन्म 26 जून, 1926, पिता बाबू ज्योति प्रशाद बंसल जागीरदार एवं प्रसिद्ध समाजसेवी हिसार। शिक्षा सी. ए. वी. हाई स्कूल हिसार, हैली कालेज आफ कामर्स लाहौर। भारतीय वायुसेना की उड़ान नैवीगेशन शाखा में। 1दिसम्बर, 1949 को कमीशन प्राप्त तथा लड़ाकू बम वर्षक विमानों के स्कवाड्रन में नियुक्त। इंग्लैंड में क्रेनवाल स्थित विश्व प्रसिद्ध उड़ान स्कूल से प्रशिक्षण तथा भारी बमवर्षक विमान कैन्बरा के अग्रिम पंक्ति स्कवाड्रन में नियुक्त।

कांगों में गई भारतीय शांति सेना में आप वायुसेना के सदस्य थे। वहां पर विद्रोहियों के ठिकानों पर आपने अचूक बमवर्षा की तथा उनकी शक्ति को क्षीण किया। इन आक्रमणों में आपके विमान को जमीनी गोलाबारी से भी काफी क्षति पहुंची परन्तु विमान को सुरक्षित अपने अड्डे पर उतार लिया। आपको कांगों में प्रदर्शित वीरता के लिए वहां की सरकार ने भी अपने देश के वीरता सम्मान से अलंकृत किया।

1965 के भारत पाक युद्ध में आप एक अग्रिम पंक्ति स्कवाड्रन में नियुक्त थे। 13 एवं 14 सितम्बर 1965 को पेशावर हवाई अड्डे पर बड़े पैमाने पर बमवर्षा की गई। इसका नेतृत्व करने तथा लक्ष्य को चिन्हित करने का कार्य स्कवाड्रन लीडर सतीश नंदन बंसल को सौंपा गया। लक्ष्य शत्रु प्रदेश के बहुत अन्दर था इसलिए विमानों को अग्रिम हवाई अड्डों से तथा सीधे रास्ते से उड़ाना पड़ा जिससे कि वापिस ठिकाने पर आने में ईंधन की कमी न हो। यद्यपि चांद बादलों में छिपा हुआ था, तथापि स्कवाड्रन लीडर बंसल ने पहाड़ियों के बीच नीची उड़ान का निश्चय किया ताकि बमवर्षक विमानों की स्थिति का शत्रु को पता न लगे। आपका वायुयान संचालन इतना सही था कि हवाई जहाजों को हवाई अड्डे के ऊपर मध्य में लाने के लिए केवल एक ही रास्ता बदलने की आवश्यकता पड़ी। जब आपने उस क्षेत्र में प्रकाश करने के लिए गोला फेंका तो शत्रु ने विमान भेदी तोपों से गोलों की बौछार कर दी। साहस एवं दृढ़ता के साथ वह शत्रु के गोलों एवं ट्रेसरों के बीच से अपने विमान को ले गए तथा लक्ष्य दर्शक बम को ठीक स्थान पर गिराया। अब बमबारी सूचक तैयार करने के लिए पुनः हवाई अड्डे के ऊपर उड़ान भरना आवश्यक था। तोपों की प्रहार रेंज से ऊपर पुनः जाने के लिए अब समय नहीं था। अतः अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा का विचार किए बिना स्कवाड्रन लीडर बंसल ने बमबारी सूचक प्राप्त करने के लिए अपने पायलट को विमान भेदी गोलों एवं ट्रेसरों की ज्वाला के बीच में से पुनः उड़ान भरने को कहा। यह सूचना तत्काल उन्होंने बमबारी के लीडर को पहुंचा दी, साथ ही उन्हें यह चेतावनी भी दी कि बमवर्षा थोड़ा ऊपर उठकर करें। यदि वे ऐसा न करते तो हमारे कई बमवर्षक विमान नष्ट हो सकते थे।

पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में स्कवाड्रन लीडर बंसल ने कितने ही ऐसे आक्रमणों में बमवर्षक विमानों का नेतृत्व किया तथा शत्रु को भारी क्षति पहुंचाई। इस कार्यवाही में उन्होंने वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा धैर्य का परिचय दिया। आपको राष्ट्रपति द्वारा वीरचक्र से अलंकृत किया गया। इसके पश्चात् विंग कमांडर के पद पर एक प्रक्षेपास्त्र केन्द्र की कमान कर रहे थे।

15 जुलाई, 1970 को आपका आकस्मिक निधन हो गया।

मेजर जनरल सुरेश चन्द्र गुप्ता, वीर चक्र

(सेवानिवृत)

जन्म 10 फरवरी 1935 मथुरा, उत्तर प्रदेश, पिता स्व. श्री एस. डी. गोयल, 4 दिसम्बर 1954 को गोरखा राइफल्स में कमीशन, 1965 के भारत–पाक युद्ध में खेमकरण क्षेत्र में युद्ध में सक्रिय भाग। जम्मू कश्मीर लद्दाख नागालैंड मिजोरम व अरुणाचल प्रदेश में तैनात रहे। 1971 के भारत–पाक युद्ध में आपने एक बटालियन का नेतृत्व किया तथा पाकिस्तानी क्षेत्र में आक्रमण कर उसके 600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को विजित किया। इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए आपको वीर चक्र से अलंकृत किया गया।

5 दिसम्बर 1971 को लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश चन्द्र गुप्ता को जो कि 5 गोरखा राइफल्स की एक बटालियन का नेतृत्व कर रहे थे पश्चिमी सैक्टर में एक गांव पर कब्जा करने का आदेश मिला वह गांव सुरंगों और रुकावटों से सुरक्षित एक सुदृढ़ ठिकाना था और दुश्मन यहां पर भारी तादाद में था। लेफ्टिनेंट कर्नल गुप्ता ने बड़ी क्षमता से अपनी बटालियन का नेतृत्व किया और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने हर स्तर पर लड़ाई पर अपना प्रभाव बनाए रखा। इस प्रकार इस मुश्किल और मजूबत मोर्चे पर कब्जा करने में उन्होंने अपने जवानों को उत्साहित और प्रेरित किया।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल सुरेश चन्द्र गुप्ता ने उच्च कोटि की वीरता दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

अन्य महत्वपूर्ण नियुक्तियां :

एक पहाड़ी ब्रिगेड में मेजर तथा डिविजन कोर व कमान स्तर पर प्रथम श्रेणी के जनरल स्टाफ अधिकारी रहे। 1/5वीं गोरखा राइफल्स की कमान, जम्मू कश्मीर क्षेत्र में एक पैदल डिवीजन की कमान, 1991 में बेलगांव स्थित इन्फैन्ट्री स्कूल के जूनियर लीडर्स विंग के कमांडर के पद से सेवानिवृत।

विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल, वीर चक्र
(सेवानिवृत)

जन्म 21 अप्रैल, 1931, जालंधर छावनी, पिता श्री लाजपत राय अग्रवाल (आपके नाना श्री फकीर चन्द अग्रवाल 1930 से 1940 तक पंजाब अग्रवाल सभा के अध्यक्ष थे), 17 जनवरी, 1953 को भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन। लड़ाकू विमान चालन के प्रशिक्षण का कार्य किया। एक लड़ाकू विमान स्कवाड्रन के फ्लाईट कमांडर। उप मुख्य उड़ान प्रशिक्षक तथा वायुसेना अकादमी में मुख्य उड़ान प्रशिक्षक रहे। दिसम्बर 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल एक सक्रियात्मक लड़ाकू स्कवाड्रन की कमान कर रहे थे। अपनी फौजों की सहायता में उन्होंने दुश्मन के बख्तरबंद और फौजी जमाव क्षेत्रों पर अनेकों सक्रियात्मक उड़ानों का नेतृत्व किया। शत्रु की भारी जमीनी गोलीबारी और हवाई विरोध के बावजूद उन्होंने अपने हमले जारी रखे और बहुत–सी गाड़ियों और भंडारों को बर्बाद किया। 4 दिसम्बर और फिर 8 दिसम्बर को उन्होंने चोर दोरोनारा क्षेत्रों में टोह उड़ानें कीं और गोला बारूद से लदी गाड़ियों का पता लगाकर उन्हें नष्ट कर दिया। 6 दिसम्बर को उन्होंने एक लड़ाकू विमानों के दल का नेतृत्व किया और चोर दोरोनारा हसीसाट क्षेत्र में एक रेलवे इंजन और गोला बारूद से लदे पंद्रह डिब्बों को नष्ट किया, फिर 9 दिसम्बर को मीर पुर खास के स्थान पर उन्होंने पन्द्रह माल गाड़ी के डिब्बों को नष्ट किया तथा 40 को नुकसान पहुंचाया और इस तरह दुश्मन को महत्वपूर्ण रसद से वंचित कर दिया।

आपको इस असाधारण वीरता के लिये वीर चक्र से अलंकृत किया गया।

आपकी अन्य नियुक्तियां इस प्रकार हैंः आप मुख्यतः प्रशिक्षण के कार्य से जुड़े रहे, संयुक्त वायु युद्ध स्कूल में मुख्य प्रशिक्षक उच्च वायु कमान कोर्स वायु युद्ध कालेज में मुख्य प्रशिक्षक के पद से 30 अप्रैल, 1979 को सेवानिवृत हुये।

आपके ही पदचिन्हों पर चलते हुए आपके पुत्र विजय अग्रवाल ने वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्राप्त किया।

स्व. फ्लाईंग आफीसर विजय अग्रवाल, (उड़ान पायलट)

जन्म 10 जुलाई 1967, पिता विंग कमांडर केशव चन्द्र अग्रवाल, वीरचक्र।

वायुसेना में प्रशिक्षण के समय (150वां उड़ान पायलट कोर्स) आपने सम्मानसूचक नवां नगर की तलवार प्राप्त की तथा राष्ट्रपति का रजत स्मृति चिन्ह प्राप्त कर अपने पाठ्यक्रम के सर्वोत्तम छात्र बने। 18 दिसम्बर, 1987 को वायु सेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्राप्त किया। पुनः मिग–21 विमान के प्रशिक्षण के समय प्रथम स्थान व ट्राफी प्राप्त की। 25 जून, 1990 को एक लड़ाकू सक्रियात्मक स्कवाइड्रन में कार्य करते हुए जब आप समुद्र पर उड़ान भर रहे थे, आपका विमान समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

एयर कोमोडोर चन्द्रमोहन सिंगला, वीर चक्र
(सेवानिवृत)

जन्म अगस्त, 1942 देहली, पिता श्री जनार्धन प्रकाश सिंगला, शिक्षा मार्डन स्कूल, देहली। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश, 1963 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन तथा हैलीकाप्टर स्कवाड्रन में नियुक्ति। आप हैलीकाप्टर प्रशिक्षक भी हैं। 1971 के भारत पाक युद्ध में आप पूर्वी क्षेत्र में एक सक्रियात्मक हैलीकाप्टर इकाई में नियुक्त थे। 7 दिसम्बर की रात्रि को उन्होंने एक सशस्त्र हैलीकाप्टर में उड़ान भरी और सिलहट क्षेत्र में हैलीकाप्टरों से सेना पहुंचाने वाले मिशन को रक्षावरण प्रदान किया। इस उड़ान के दौरान शत्रु ने उनके विमान पर जमीन से तेज गोलाबारी की तथा उनके हैलीकाप्टर में 8 जगह क्षति पहुंची तब भी उन्होंने अपना अभियान जारी रखा और निरन्तर साढ़े 4 घन्टे तक रक्षावरण प्रदान किया तथा उन्होंने जमीनी लक्ष्यों पर अचूक निशाने लगाकर 35 राकेट छोड़े उसके बाद भी वे 12 दिसम्बर तक हर रात शत्रु प्रदेश में उनके भीतरी ठिकानों पर आक्रमण कर शत्रु को क्षति पहुंचाते रहे।

इस साहस शौर्य एवं उच्चकोटि की कर्तव्यनिष्ठा पर राष्ट्रपति ने आपको वीर चक्र से अलंकृत किया। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैं:—

एक सक्रियात्मक हैलीकाप्टर इकाई की कमान, हैलीकाप्टर ट्रेनिंग स्कूल में मुख्य प्रशिक्षक, भारतीय वायुसेना के प्रतिष्ठापूर्ण विमान कर्मी परीक्षा बोर्ड में प्रशिक्षक। इराकी वायुसेना में प्रशिक्षक रहे। हैलीकाप्टर ट्रेनिंग स्कूल हैदराबाद के कमान अधिकारी रहे। भारत सरकार के कृषि विमानन प्रभाग में मुख्य संचालन अधिकारी, 8वीं पहाड़ी डिवीजन की वायु समन्वय शाखा के कमान अधिकारी तथा एक अग्रिम वायुसेना केन्द्र के मुख्य संचालन अधिकारी तथा सितम्बर 1990 में वायुसेना केन्द्र पालम के वायु कमान अधिकारी के पद से सेवानिवृत हुए।

18 सितम्बर 1990 से भारत सरकार के उपक्रम पवन हंस (हैलीकाप्टर निगम) के प्रबन्ध निदेशक के पद पर आसीन हैं।

ग्रुप कैप्टन महावीर प्रसाद प्रेमी, वीर चक्र, वायु सेना मैडल (सेवानिवृत)

जन्म 6 मार्च 1942 मेरठ कैन्ट, पिता श्री एल. एन. प्रेमी, भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन प्राप्त। 1971 के भारत–पाक युद्ध में आप राजस्थान सैक्टर में एक हैलीकाप्टर टुकड़ी की कमान कर रहे थे। 6 दिसम्बर को जब वे घायल सैनिकों को निकालने में लगे थे, उन्होंने अपने हैलीकाप्टर के पास एक बम देखा। बम के खतरे को समझते हुए उन्होंने हैलीकाप्टर को उड़ा ले जाने का निर्णय लिया और उन्होंने हैलीकाप्टर चालू ही किया था कि हवाई अड्डे पर शत्रु के हवाई आक्रमण की चेतावनी दी गई परन्तु इसके बावजूद उन्होंने उड़ान की और हैलीकाप्टर को सुरक्षित क्षेत्र में उतारा। उसके तुरंत बाद ही बम फट गया किन्तु उनकी समयोचित कार्यवाही से हैलीकाप्टर व घायल सैनिक बच गये। 11 दिसम्बर 1971 को उन्होंने दो हताहतों को एक ऐसे क्षेत्र से निकाला जिस समय शत्रु हवाई आक्रमण कर रहा था। इस कार्यवाही में फ्लाईट लेफ्टिनेंट प्रेमी ने उच्चकोटि की वीरता व्यवसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

आपको राष्ट्रपति द्वारा वीर चक्र से अलंकृत किया गया। 1985 में आप सरसावा वायुसेना केन्द्र में एक हैलीकाप्टर स्कवाड्रन की कमान कर रहे थे। उस केन्द्र में छोटे विमान आर्टर की भी एक स्कवाड्रन थी। उस स्क्वाड्रन के एक विमान को हवाई अड्डे से दूर एक खेत में विवश हो कर उतारना पड़ा। यह खेत पानी से भरा हुआ था। आप अपने उड़ान कौशल का परिचय देते हुए अपने स्कवाड्रन के दो एम 1–8 हैलीकाप्टरों द्वारा उस विमान को पूर्णतया उठा कर सुरक्षित अपने हवाई अड्डे पर वापिस ले गए। तथा अपने ढंग का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आपको इस असाधारण कर्तव्यनिष्ठा तथा वैमानिक कौशल के लिए वायुसेना मैडल से अलंकृत किया गया। अन्डेमान निकोबार द्वीप समूह में भी आपकी नियुक्ति रही।

केन्द्रीय कमान के अग्रिम मुख्यालय से आप ग्रुप कैप्टन के पद से सेवानिवृत।

आजकल आप कोल इण्यिा लि. में हैलीकाप्टर पायलट हैं।

लेफ्टिनेंट कर्नल पुरुषोतम तुलस्यान, वीर चक्र

जन्म 26 जनवरी 1948, पिलानी के बंसल परिवार में, पिता स्व. श्री बृज मोहन जोकि 40वें व 50वें दशक में बंबई बुलियन की एकहस्ती माने जाते थे। महाराजा कालेज जयपुर से स्नातक तथा 1970 में भारतीय सेना की ब्रिगेड आफ गार्डस की दसवीं बटालियन में कमीशन।

1971 के भारत–पाक युद्ध में अद्वितीय वीरता प्रदर्शन पर राष्ट्रपति द्वारा वीरचक्र से अलंकृत, 13 दिसम्बर 1971 को रात के साढ़े ग्यारह बजे, शकरगढ़ के इलाके में वेन नदी के पार दुश्मन की रक्षा तैयारी का पता लगाने के लिए 10 गार्ड के सैकेन्ड लेफ्टिनेंट पुरुषोतम तुलस्यान ने एक सैन्यदल का नेतृत्व किया। इनकी पेट्रोल पार्टी 300 गज नदी के इलाके में ही जा सकी थी, कि इनका मुकाबला दुश्मन के 45 जवानों की पेट्रोल पार्टी से हो गया। दुश्मन ने इनके सैन्यदल को देखकर, अपने आपको तीन ग्रुपों में विभाजित कर लिया। सैकेन्ड लेफ्टिनेंट पुरुषोतम तुलस्यान ने दुश्मन को चुनौती दी और उनके लीडर की गर्दन पकड़ कर उससे उसकी सैन्यबल की जानकारी प्राप्त कर ली। अचानक दुश्मन के दूसरे ग्रुप ने सैकिण्ड लेफ्टिनेंट पुरुषोतम तुलस्यांन व उनके जवानों पर गोली चलादी। इसके जवाब में इन्होंने भी गोली चलाई। इस मुठभेड़ में इन्होंने दुश्मन के 9 जवानों को जिनमें एक कैदी भी था को मार डाला और एक स्वचालित राइफल व 3 स्टेनगनों को अपने अधिकार में ले लिया। इस कार्य में सैकिण्डं लेफ्टिनेंट पुरुषोतम तुलस्यान ने तीव्र बुद्धि, साहस व उच्च दर्जे की सूझबूझ का परिचय दिया। इस वीरता के लिए इन्हें वीरचक्र से अलंकृत किया गया।

आप स्टाफ कालेज के स्नातक हैं तथा आपने अपने स्तर पर कानून की परीक्षा व स्नाकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की है। 1984 में आपरेशन्स ब्लू स्टार में सक्रिय भाग, भारतीय शांति सेना के श्रीलंका में आपरेशन्स "पवन" में सक्रिय भाग लिया। आजकल आप 125वीं इन्फैन्ट्री बटालियन प्रादेशिक सेना तिरूमुलगरी सिकन्दराबाद में हैं।

मास्टर चीफ इलैक्ट्रिकल आर्टिफिसर मेघनाथ संगल, वीर चक्र

जन्म 24 अक्तूबर, 1943 गांव झरेरी हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश), पिता श्री दीवान चन्द, शिक्षा गवर्नमेंट हाई स्कूल कांगू हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश), भारतीय नौसेना में 6 फरवरी 1960 को नामांकन।

मेघनाथ संगल उस भारतीय नौसेनिक पोत के कर्मीदल के सदस्य थे जिसमें 4 दिसम्बर 1971 की रात को कराची बन्दरगाह पर आक्रमण किया था। दुश्मन के हवाई हमले और तटवर्ती तोपों के खतरे के होते हुए भी इन्होंने अपने जवानों के साथ आक्रमण कर दिया। इनके बहादुर और प्रेरक नेतृत्व के कारण इनकी नौसैनिक टुकड़ी पाकिस्तान के समुद्री बेड़े को करारी चोट पहुंचा सकी। इस कार्यवाही में मास्टर चीफ इलैक्ट्रिकल अर्टिफिसर मेघनाथ संगल ने सराहनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

राष्ट्रपति ने आपको वीर चक्र से अलंकृत किया।

स्कवाड्रन लीडर विश्वनाथ प्रकाश, वीरचक्र

जन्म 26 सितम्बर, 1961 वाराणसी, आप ब्रिगेडियर भोज प्रकाश के सबसे छोटे पुत्र हैं। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश तथा मई 1983 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन, हैलीकाप्टर पायलट, 1987 में श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के सदस्य एवं अभूतपूर्व वीरता प्रदर्शन करने पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा वीर चक्र से अलंकृत। फ्लाईंग अफसर विश्वनाथ प्रकाश श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के भाग के रूप में वायुसेना में तैनात थे। 11/12 अक्तूबर, 1987 की रात में एक विशेष कार्य पर भेजे गए चार विमानों के बेड़े में से एक विमान के कैप्टन थे। सेवा में अपेक्षाकृत कनिष्ठ होने और दूसरे कैप्टनों की तुलना में कम अनुभव होने के बावजूद इन्होंने बहुत ही उच्चकोटि की दृढ़ता और धैर्य का परिचय दिया। इन्होंने रात्रि के समय सफलतापूर्वक तीन मिशन पूरे किए। हैलीपैड पर आतंकवादियों की भारी गोलाबारी हो रही थी और इनके हैलीकाप्टर को भी गोलीबारी

से काफी क्षति पहुंची थी। इस पर भी ये अपने हैलीकाप्टर को सुरक्षित रूप से बेस तक वापिस ले आए। इस प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेंट विश्वनाथ प्रकाश ने भूमि से हो रही आतंकवादियों की गोलाबारी का सामना करते हुए असाधारण साहस का परिचय दिया।

इसके उपरान्त 1991 में राष्ट्रपति द्वारा उनके स्कवाड्रन को ध्वज प्रदान किया तथा ध्वज ग्रहण करने का गौरव इन्हें प्राप्त हुआ। पुनः 15 अगस्त 1991 को अथक परिश्रम एवं कर्तव्यनिष्ठा के लिए वायुसेना अध्यक्ष के प्रशंसा पत्र से सम्मानित, आपका 2500 घंटों की उड़ान का अनुभव है तथा वर्तमान में केन्द्रीय वायु कमान में नियुक्त हैं।

आपका पूरा परिवार सेना के माध्यम से राष्ट्र सेवा में रत है।

ब्रिगेडियर भोज प्रकाश, सेवानिवृत

चित्र : मेजर सुमन देवडा, ब्रिग्रेडियर भोजप्रकाश एवं मेजर संजय प्रकाश

जन्म जून, 1930, शाहबाद मारकंडा हरियाणा,सवाई मानसिंह मैडिकल कालेज से एम. बी. बी.एस की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 24 जनवरी 1955 को भारतीय सेना की चिकित्सा कोर में कमीशन प्राप्त किया। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैः– एक चिकित्सा बटालियन की कमान, एक महत्वपूर्ण सैनिक हस्पताल की कमान, एक डिवीजन की चिकित्सा सेवाओं के उप निदेशक और एक कोर के उप चिकित्सा निदेशक तथा 34 वर्ष की शानदार सेवाओं के पश्चात 30 जून 1988 को सेवानिवृत।

स्कवाड्रन लीडर विश्वनाथ प्रकाश (वीर चक्र) आपके पुत्र हैं आपका पूर्ण परिवार सेना के माध्यम से देश–सेवा में है जो कि एक उदाहरण है। आप स्वयं सेना से सेवानिवृत हैं। आपके सबसे बड़े पुत्र मेजर संजय प्रकाश, पुत्री मेजर सुमन देवडा तथा छोटे पुत्र स्कवाड्रन लीडर विश्वनाथ प्रकाश, सभी सैनिक सेवा में हैं। सभी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैः–

मेजर संजय प्रकाश

जन्म 5 अगस्त 1956 नई दिल्ली, पिता ब्रिगेडियर भोज प्रकाश सेना की आर्मड कोर में दिसम्बर 1977 में कमीशन प्राप्त। कई महत्वपूर्ण सैनिक अभियानों में भाग लिया। वर्तमान में एक आमर्ड रेजिमेंट में स्कवाड्रन कमांडर हैं।

मेजर श्रीमती सुमन देवडा

जन्म 20 नवम्बर, 1958, पिता ब्रिगेडियर भोज प्रकाश, जम्मू मैडिकल कालेज से एम. बी. बी. एस., 1986 में सेना चिकित्सा कोर में कमीशन। आपके पति मेजर अजय देवडा भी चिकित्सा कोर में नेत्र विशेषज्ञ हैं।

लेफ्टिनेंट कमांडर दीपक अग्रवाल, वीर चक्र (सेवानिवृत)

पिता स्व. श्री ओंकार प्रसाद अग्रवाल लखनऊ। शिक्षा सैंट फ्रांसिस हाई स्कूल लखनऊ, डी. ए. वी. कालेज, चन्डीगढ़ क्रिश्चिन कालेज लखनऊ, जुलाई 1970 को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी खड़गवासला में प्रवेश। मई 1975 में भारतीय नौसेना में कमीशन प्राप्त तथा विभिन्न युद्ध पोतों पर कार्य किया। 31 मई 1987 को एक छोटे युद्धपोत टी–56 की कमान संभाली तथा श्रीलंका में शांति सेना के सैनिक अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया। अपने दृढ़ निश्चय वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व व साहस के प्रदर्शन पर राष्ट्रपति द्वारा वीरचक्र से अलंकृत। वीरचक्र का वाचन उल्लेख इस प्रकार है:–

"लेफ्टिनेंट कमांडर दीपक अग्रवाल भारतीय नौसेना के रक्षा पोत टी–56 के कमांडर थे। यह युद्धपोत बहुत ही छोटे आकार का तथा सुविधाओं से रहित है। श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के अभियान के समय इस पोत को मुक्ति सेना के आदमियों व साज समान के अनाधिकृत आवागमन को रोकने का कठिन कार्य सौंपा गया। रात व दिन निरंतर सर्तकता रखी गई और जब आतंकवादियों ने हिंसक गतिविधियाँ प्रारम्भ की तो यह कार्य और भी कठिन व जोखिम पूर्ण हो गया।"

"लेफ्टीनेन्ट कमांडर दीपक अग्रवाल ने उच्चकोटि के साहस व कौशल का परिचय दिया तथा परिचालन की सर्वथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने दल को संचालित किया तथा दिए गए कार्य को अनुकरणीय कौशल से सम्पन्न किया। 3 तथा 4 नवम्बर 1987 की रात्रि को एक बड़े व्यक्तिगत खतरे को झेलते हुए रात्रि के गहन अंधेरे में तथा समुद्र में विपरीत व विकट परिस्थितियों में तथा शत्रु की ओर से भारी गोलाबारी के अवरोधों के बावजूद अविचलित होकर छापामार सैनिक दस्तों को पहुंचाया।"

"लेफ्टिनेंट कमांडर दीपक अग्रवाल ने शौर्य, साहस व अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया है।"

31 अक्तूबर, 1990 को आप स्वेच्छा से सेवानिवृत हो गए हैं।

स्कवाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल शौर्य चक्र एवं वायु सेना मैडल (सेवानिवृत)

दिसम्बर 1971 के भारत–पाक युद्ध के समय आप एक लड़ाकू बम वर्षक स्कवाड्रन में नियुक्त थे। आपने शत्रु के भीतरी ठिकानों पर बहुत से हमले किए। 10 दिसम्बर 1971 को आपने कुश्तीया (बंगलादेश) में ब्रिगेड मुख्यालय पर हमले के दल का नेतृत्व किया। जमीन से भारी गोलाबारी से अविचलित आपने शत्रु के उस संवदेनशील तन्त्र को समाप्त कर दिया। इस हवाई आक्रमण के समय उनके विमान में नीचे से गोलियां लगीं जिसके कारण उनके विमान की मुख्य ईधन टंकी में सुराख हो गया। ईंधन रिसते हुए विमान को आपने और ऊंचाई प्राप्त करने के लिए ऊपर चढ़ा दिया तथा अपने अड्डे की ओर मुड़ चले। अपने अड्डे से मात्र 10 मील की दूरी उनके विमान का ईधन समाप्त हो गया। यद्यपि विमान क्षेत्र आंशिक रूप से बादलों से ढका हुआ था। आपने उच्च कोटि के उड़ान कौशल का परिचय देते हुए अपने विमान को सुरक्षित उतार लिया। इस घटना से अवचिलित आपने उसी दिन खुलना में दूसरे हवाई आक्रमण का नेतृत्व किया तथा जमीन से शत्रु की भारी गोलाबारी के होते हुए भी शत्रु के एक टैंक को समाप्त कर दिया तथा दूसरे टैंक को निष्क्रिय कर दिया। उन्होंने खुलना की ओर बढ़ते हुए एक शत्रु दल को भी भारी नुकसान पहुंचाया। वायु सेना की शानदार परम्पराओं का पालन करते हुए आपने उच्च कोटि के उड़ान कौशल साहस एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया जिसके कारण राष्ट्रपति ने आपको वायु सेना मैडल से अलंकृत किया।

स्कवाड्रन लीडर प्रदीप कुमार तायल हिन्दुस्तान एयरोनारिक्स बंगलौर में उड़ान परीक्षण पायलट थे। आपने अजीत मेक–1 व किरण मेक–1 व मेक–2 मारुत, एच. पी. टी.–32 व अजीत प्रशिक्षण विमानों की प्रयोगात्मक परीक्षण उड़ानों को पूरा किया है। इसमें अत्याधिक संकटपूर्ण अभ्यास भी शामिल है। जैसे इन सभी विमानों के तकली के समान घूमते हुए परीक्षणों तथा मारुत विमान पर उच्च गति के नियंत्रण का परीक्षण।

इन सबके अतिरिक्त आप 12 विभिन्न प्रकार के विमानों व हैलिकाप्टरों के उत्पादन उड़ान परीक्षण के कार्यों को भी करते रहे हैं। इन परीक्षण उड़ानों के समय अपने कई गंभीर आपातकालीन परिस्थितियों जैसे इंजन, विद्युत एवं हाइड्रोलिक प्रणाली के पूर्णतया तथा असफल होजाने का भी कुशलता पूर्वक सामना किया है। ऐसे ही एक अवसर 21 अप्रैल 1983 को अजीत विमान के परीक्षण उड़ान के समय उसकी हाइड्रोलिक प्रणाली असफल होगई जिससे उसके अग्र भाग का पहिया बाहर नहीं निकल सका। उसके पहिये को बाहर निकालने के प्रयासों में उसका इंजन भी अप्रत्याशित रूप से बन्द हो गया। आपने इस आपातकालीन परिस्थिति का बड़े ही साहस एवं कौशल से सामना किया। आप न केवल उसके इंजन को पुनः शुरू करने अपितु अपने पहियों को भी बाहर निकालने में सफल हुए जिसके कारण विमान को सुरक्षित उतार लिया।

ऊपर वर्णित सभी उत्पादन परीक्षणों की प्रयोगात्मक उड़ानों के समय इस कार्य को आप लगभग सात वर्षों से निरन्तर कर रहे हैं। आपने स्वेच्छा से इन जोखिम भरे कार्यों को अत्यन्त साहस एवं कर्तव्य निष्ठा पूर्वक पूर्ण किया है। आपने अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पण व उच्च कोटि की दृढ़ता का परिचय दिया है।

आपके इन साहसपूर्ण कार्यों का सम्मान करते हुए राष्ट्रपति आपको शौर्य चक्र से अंलकृत किया।

स्कवाड्रन लीडर प्रमोद कुमार जैन शौर्य चक्र

जन्म 17 मार्च 1955, नई दिल्ली, पिता श्री कस्तूर चन्द जैन, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश तथा वहां पर अपने प्रशिक्षण काल में अपने स्कवाड्रन के कैडेट कैप्टन बने तथा रजत पदक प्राप्त किया। 10 जून 1977 को वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन। 4 दिसम्बर 1979 को अपने विमान में भारी तकनीकी खराबी के होने पर उसे सुरक्षित वापिस उतारने के साहसिक एवं व्यवसायिक कौशल के लिए राष्ट्रपति द्वारा शौर्य चक्र से अलंकृत किया गया। दिसम्बर 1979 को फ्लाईग आफीसर प्रमोद कुमार जैन वायु–युद्ध प्रशिक्षण उड़ान पर थे। आप अपने आधार से 8 किलोमीटर की ऊंचाई पर थे कि आपके विमान का जनरेटर खराब हो गया जिसके कारण सारी विद्युत प्रणाली समाप्त हो गई तथा दिशा एवं संचार प्रणाली भी बन्द हो गई। विमान के काकपिट में उस समय स्थिति और भी खराब हो गई जब घातक धुआं विद्युत उपकरणों में आग लगने के कारण भर गया। इससे न केवल दिखाई देना बंद हो गया अपितु घुटन के कारण कष्टप्रद भी हो गया। एक युवा प्रशिक्षु पायलट के लिए यह बड़ी गंभीर स्थिति थी। लेकिन फ्लाईग आफीसर जैन ने इस संकट की घड़ी में धैर्य नहीं छोड़ा तथा संकट कालीन नियमों का पालन करते हुए विमान को अपने आधार क्षेत्र की ओर मोड़ दिया। सभी तकनीकी प्रणाली व सुविधाओं के अभाव में भी व्यवसायिक कौशल का परिचय देते हुए जबकि अवतरण अवरोधक हवाई छतरी भी निष्क्रिय थी तथा अन्य गतिरोधक भी निष्क्रिय थे। अपने विमान को सुरक्षित अपने अड्डे पर उतार दिया।

इस कार्य में फ्लाईग आफीसर जैन ने उच्च कोटि के साहस, बुद्धिमता व व्यवसायिक कौशल का परिचय दिया।

आपकी अन्य नियुक्तियां इस प्रकार हैः– वायु सेना के 47वें स्कवाड्रन के स्टाफ पायलट, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रशिक्षक, 224वें व 2210वें स्कवाड्रन के फ्लाईट कमांडर। वर्तमान में आप 2210 वें स्कवाड्रन वायु सेना में नियुक्त हैं। 1988 में रक्षा स्टाफ कालेज से स्नातक।

सार्जेंट शाम बिहारी गुप्ता शौर्य चक्र

सार्जेन्ट शाम बिहारी गुप्ता आर्कटंटिका में गए भारतीय वैज्ञानिक अभियान दल में वायुसेना दल के सदस्य थे। इस अभियान दल की सफलता, इस दल में गए एक मात्र एम.आई.–8 हैलीकाप्टर द्वारा आपूर्ति सहायता करने पर थी, क्योंकि एक दूसरा हैलाकाप्टर इस अभियान के प्रारम्भिक काल में ही नष्ट हो गया था।

तकनीकी दल के सार्जेन्ट गुप्ता वरिष्ठतम सदस्य होने के नाते अपने रख–रखाव के निरीक्षण सम्बन्धी कार्य के अतिरिक्त हैलीकाप्टर से सामान–उतारने व चढ़ाने में अपने साथियों के साथ लगे रहे। मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वायुसेना को सौंपे गए कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने में आपने असामान्य कर्तव्य पालन का परिचय दिया।

29 दिसम्बर 1983 को जिस एम.आई.–8 हैलीकाप्टर में वह यात्रा कर रहे थे, ठंडे बर्फानी पानी में दुर्घटनाग्रस्त होगया। हैलीकाप्टर इस पानी में बड़ी तेजी के साथ डूबता जा रहा था एवं सार्जेन्ट गुप्ता सहित सारा विमान कर्मी दल अन्दर फंसा हुआ था। इस जटिल परिस्थिति में भी सार्जेन्ट गुप्ता ने साहस व बुद्धिमता का प्रदर्शन किया तथा अपने सभी साथियों के जीवन रक्षा उपायों में लगे रहे। फ्लाईट लेफ्टिनेंट राय की सहायता से उन्होंने हैलीकाप्टर की दीवार में से रास्ता बना लिया तथा अपने साथियों के अमूल्य प्राणों की तेजी से डूबते हुए हैलीकाप्टर से बाहर निकाल कर रक्षा की। उन्हें स्वयं उस बर्फानी पानी में 15–20 मीटर तैरना पड़ा। अन्ततः उन्हें भी नौसेना की बचाव नौका द्वारा बचा लिया गया। इस भयानक दुर्घटना के बावजूद उन्होंने केवल 2 दिनों के अन्तराल में ही बड़े साहस एवं उत्साह के साथ वापिस अपना सामान्य कार्य शुरू कर दिया।

इस प्रकार सार्जेन्ट गुप्ता ने प्रशंसनीय बुद्धिमता साहस एवं पहल का अपने प्राणों की तनिक भी चिन्ता न कर परिचय दिया जिससे कर्मीदल के सभी सदस्यों की प्राण रक्षा संभव हो सकी। राष्ट्रपति ने आपको शौर्य चक्र प्रदान किया।

श्री नरेश कुमार गुप्ता शौर्य चक्र (मरणोपरांत)

12 मई 1986 को प्रातः 8 बजे कुछ बदमाश एक 16–17 साल की लड़की के साथ छेड़–छाड़ कर रहे थे और उसे उठाकर ले जाने की कोशिश कर रहे थे। वह लड़की अपने घर जा रही थी और श्री नरेश कुमार गुप्ता के घर के पास से गुजर रही थी। सहायता के लिए लड़की की चीख–पुकार सुनकर श्री नरेश कुमार गुप्ता अपने घर से निकले और उन बदमाशों को रोका। इस पर बदमाश उनसे भिड़ गए। निहत्थे होने पर भी उन्होंने उनका बहादुरी से मुकाबला किया। बदमाशों ने चाकुओं से श्री गुप्ता पर वार करके उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया जहां उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार श्री नरेश कुमार गुप्ता ने एक अल्पवयस्क लड़की के सम्मान की वीरतापूर्वक रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। राष्ट्रपति द्वारा आपको मरणोपरांत शौर्य चक्र से अलंकृत किया गया। आप बांदा उत्तरप्रदेश के निवासी थे।

स्व. कर्नल रामकृष्ण बंसल शौर्य चक्र

जन्म 12 मई 1943, फिरोजपुर पंजाब, स्वतन्त्रता के उपरान्त इनका परिवार दिल्ली में आ गया। प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली में हुई। स्कूल जीवन में कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किए। स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1967 में आप भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में बैठे तथा भारतीय डाक सेवा में नियुक्ति हुई। भारतीय डाक सेवा में प्रवर अधीक्षक डाकघर के रूप में कार्य करने के उपरान्त आपको प्रतिनियुक्ति पर सेना डाक सेवा में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां पर आपने अपने श्रम कौशल का प्रदर्शन किया और डाक सेवा सुचारू रूप से दूर–दराज के क्षेत्रों में पहुंचाने का कार्य किया। वर्ष 1984 के दंगों में आपने कई यात्रियों की प्राण रक्षा की तथा सेना डाक सेवा के प्रथम शौर्य चक्र प्राप्त अधिकारी बनने का गौरव प्राप्त किया। 14 नवम्बर 1984 को कर्नल रामकृष्ण बंसल रेल द्वारा अस्थाई कार्य के लिए कलकत्ता जा रहे थे उन्होंने टूंडला व शिकोहाबाद रेलवे स्टेशनों पर उग्र भीड़ को देखा जो कि एक ही समुदाय के लोगों को पीटने व जान से मारने पर उतारू थी। जिसमें उस समुदाय से सम्बन्धित सैनिक जो उनकी रेल में यात्रा कर रहे थे भी शामिल थे। उन्होंने पूरी रेल में स्वयं गश्त लगा कर सभी सैनिकों व अन्य यात्रियों को आपने प्रथम श्रेणी वातानुकूलित यान में सुरक्षित पहुंचाया। उन्हें अपने प्राणों की तनिक भी चिन्ता न थी और स्वयं द्वार पर खड़े होकर दंगाईयों को घुसने से बलपूर्वक रोका तथा अगले स्टेशनों पर समुचित सुरक्षा व्यवस्था प्रदान करने का निर्देश दिया।

इस प्रकार कर्नल रामकृष्ण बंसल ने साहस, पहल, बुद्धिमत्ता अपने जन–कर्तव्य तथा उच्चकोटि की वीरता का अनुकरणीय परिचय दिया तथा अमूल्य प्राणों की रक्षा की। 1986 में राष्ट्रपति भवन में आयोजित रक्षा अलंकरण समारोह में राष्ट्रपति द्वारा आपको शौर्य चक्र से अलंकृत किया गया।

1989 में आपका चयन 9 महीने के "लोक प्रशासन कोर्स" के लिए हुआ। इस कोर्स के समय आप एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से आहत हुए तथा आपका दुखद निधन हो गया।

कुमारी सविता गोयल शौर्य चक्र

जन्म 7 अप्रैल 1970 नई दिल्ली, पिता स्व. आई. सी. गोयल आपको वर्ष 1986 में आपके वीरतापूर्ण कार्य पर शौर्य चक्र से अलंकृत किया।

31 मार्च 1984 को लगभग दोपहर 12.30 बजे पांच सशस्त्र लुटेरे यमुना विहार में श्री आई. सी. गोयल के घर में घुस गए। उनमें से दो के पास गोलियों से भरी हुई देशी पिस्तोलें थीं और तीन चाकू लिए हुए थे। उन्होंने श्री गोयल से जोकि उस समय बैठक में ही थे को सभी कीमती सामान उनके सुपुर्द कर देने को कहा। श्री गोयल ने एक लुटेरे को दबोच लिया इस पर अन्य लुटेरों ने श्री गोयल को निर्दयता पूर्वक पीटना शुरू कर दिया। यह देखकर श्री गोयल की चौदह वर्षीय पुत्री कुमारी सविता गोयल रसोई घर से भाग कर आई तथा एक लुटेरे को पकड़ लिया। लुटेरे ने उसे चाकू से डराया लेकिन उसने उसे नहीं छोड़ा। इसी समय एक लुटेरे ने श्री गोयल पर गोली चला दी तथा श्री गोयल गंभीर रूप से घायल हो गए और कुमारी सविता को भी इस हादसे में काफी चोटें आई। तब पांचों लुटेरे घर से बाहर आ गए और विभिन्न दिशाओं में भागने लगे। बुरी तरह घायल होने पर भी कुमारी सविता ने उनका कुछ दूर तक पीछा किया और सहायता के लिए जोर से चिल्लाई। यह सुनकर लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने लुटेरों का पीछा किया। इसी दौरान पुलिस भी आ गई और लुटेरों का पीछा कर उनमें से एक को पकड़ लिया।

इस प्रकार से कुमारी सविता गोयल ने सशस्त्र डाकुओं से मुठभेड़ में अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया। इस घटना में आपके पिता का निधन हो गया।

स्व. श्रीमती रेणु अग्रवाल शौर्य चक्र (मरणोपरांत)

शिक्षा एम. ए. बी. एड., पति श्री टी. पी. सिंह (मित्तल) निवासी सोनीपत। आपने अपने प्राणों की आहुति देकर दो बच्चों के प्राणों की रक्षा की। मरणोपरांत शौर्य चक्र प्राप्त करने वाली भारत की प्रथम महिला होने का गौरव प्राप्त किया।

27 अगस्त 1991 को श्रीमती रेणु अग्रवाल दिल्ली में अपने काम पर जाने के लिए अन्य दैनिक रेल–यात्रियों के साथ सोनीपत रेलवे–स्टेशन पर खड़ी हुई थी। उसी समय उन्होंने देखा की दो बच्चे उस रेल पटरी पर खड़े हुए थे जिस पर अमृतसर जाने वाली 337–अप यात्री गाड़ी आ रही थी। यह देखकर की दोनों बच्चों का जीवन गंभीर संकट में है, श्रीमति रेणु अग्रवाल अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए बच्चों को बचाने के लिए दौड़ी। उन्होंने समय पर कार्यवाही करके दोनों बच्चों को तेजी से आ रही गाड़ी के आगे से सकुशल हटा लिया। जिससे उन दोनों बच्चों की जान बच गई परन्तु वह स्वयं समय पर गाड़ी के आगे से नहीं हट पाई और उसके नीचे आ गई।

इस प्रकार श्रीमती रेणु अग्रवाल ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया तथा अपनी जान की बाजी लगा कर उन्होंने दो बच्चों के प्राणों की रक्षा की।

इस वर्ष (1992) में राष्ट्रपति भवन में आयोजित अलंकरण समारोह में उनके पति टी. पी. सिंह जोकि स्वंय नौसैनिक हैं ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंघल राष्ट्रपति का पुलिस पदक एवं भारतीय पुलिस पदक एवं बार पुलिस महानिदेशक (सेवानिवृत)

जन्म 15 सितम्बर 1931 लखनऊ, पिता स्व. श्री एम. एस. सिंघल भूतपूर्व सदस्य राजस्व बोर्ड उत्तर प्रदेश तथा मुख्य सचिव राजस्थान सरकार। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल आपके भाई हैं। आपके एक अन्य बड़े भाई स्व. मेजर विनोद प्रकाश सिंघल राजपूताना राइफल्स में थे उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा बाद में सेना छोड़कर भारतीय प्रशासनिक सेवा में अधिकारी बने तथा वरिष्ठ पद से सेवानिवृति प्राप्त की। श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंघल देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारियों में से एक हैं। (यह संख्या सम्भवतः केवल 2 है।)

आपने विज्ञान में स्नातकोत्तर तथा कानून की परीक्षा पास की। अक्तूबर 1955 में भारतीय पुलिस सेवा में अधिकारी तथा उत्तर प्रदेश कैडर में आबंटित। जहां पर आप 5 जिलों में सहायक पुलिस अधीक्षक, सात जिलों में पुलिस अधीक्षक, चार परिक्षेत्रों में उप–महानिरीक्षक पुलिस तथा डाकू उन्मूलन अभियान के उप–महानिरीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधी विभाग के उप–महानिरीक्षक, आगरा क्षेत्र के महानिरीक्षक, प्रिंसीपल पुलिस ट्रेनिंग कालेज मुरादाबाद। आप एक अत्यंत निडर व निष्पक्ष पुलिस अधिकारी रहे हैं। 1965 में आपको बड़े सशस्त्र डाकू गिरोह से जो कि 14 वर्षों से कई जिलों में अपना आतंक बनाए हुए था से साहसिक मुकाबले व उनके सफाए में प्रदर्शित वीरता पर आपको प्रथम बार राष्ट्रपति द्वारा भारतीय पुलिस पदक से अलंकृत किया गया।

पुनः दूसरी बार 1966 में एक साढ़े चार वर्षीय बालक को अपहरण कर्त्ताओं के चंगुल से उनके अड्डे पर अकेले जा कर छुड़ाने जैसे वीरतापूर्ण कार्य करने पर राष्ट्रपति द्वारा भारतीय पुलिस पदक एवं बार से अलंकृत किया गया।

तीसरी बार फिर 1977 में अपनी सराहनीय व उत्कृष्ट सेवाओं के लिए भारतीय पुलिस पदक से अलंकृत हुए और अन्ततः 1983 में आपको सर्वोच्च पुलिस सम्मान राष्ट्रपति के पुलिस पदक से प्रशंसनीय सेवाओं के लिए अलंकृत किया गया।

आपने अपने पुलिस सेवाकाल में बहुत ही ख्याति अर्जित की है, एवं अपराधियों से भी मानवीय आधार पर व्यवहार किया है। आप एक कुशल विचारक व अच्छे लेखक हैं।

आप पुलिस सेवा के सर्वोच्च पद महानिर्देशक के पद पर महानिदेशक नागरिक सुरक्षा, गृह मंत्रालय भारत सरकार से सेवानिवृत होने के तुरंत बाद आपको बंबई स्थित केन्द्रीय फिल्म प्रमानन् बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जहां से आपने स्वेच्छा से सेवा निवृति ग्रहण की है।

स्कवाड्रन लीडर संजय मित्तल युद्ध सेवा मैडल

जन्म 9 जुलाई 1961 पिता लेफ्टि. कर्नल आर.के. मित्तल। 1982 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन तथा हैलीकाप्टर पायलट।

अक्तूबर 87 में भारतीय शान्ति सेना में जाने वाली यूनिट के गिने चुने पायलटों में प्रथम थे। जाफना के संघर्ष में इस प्रकार इस अफसर ने दिन–रात लगातार 211 अभियान उड़ानें भरीं। फरवरी में यह यूनिट अपने नए स्थान पर पहुंची और तब से इन्होंने अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियां और अपरिचित इलाके में सैनिक ले जाने लाने, हताहतों को निकालने और परिभारिकी सहायता पहुंचाने जैसे विभिन्न अभियानों में भाग लिया। शत्रु की गोलाबारी से घिरे क्षेत्रों में अपनी गतिविधियां जारी रखने की उनकी व्यवसायिक कुशलता ने दूसरे वायु कर्मियों में आत्म विश्वास का संचार किया।

स्कवाड्रन लीडर संजय मित्तल को उनके उड़ान कौशल और कर्तव्य परायणता के लिए राष्ट्रपति द्वारा युद्ध सेवा मैडल से अलंकृत किया गया।

मेजर संजय अग्रवाल सेना मैडल एवम् बार

जन्म 28 फरवरी 1959 फैजाबाद उ.प्र. पिता लेफ्टि. कर्नल एस. डी. अग्रवाल डिस्पैचेस में उल्लेख (सेवा निवृत्त) 9 जून, 1979 को 19वीं कुमाऊं रेजिमेन्ट में कमीशन (इस रेजिमेन्ट में सीधे कमीशन प्राप्त करने वाले आप पहले अधिकारी हैं।) आपने विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में विशिष्टता 'ए श्रेणी' में प्राप्त की। फरवरी 1987 से नवम्बर 1987 तक इंडियन मिलिटरी अकादमी देहरादून में भारतीय सेना के भावी अधिकारियों को प्रशिक्षण, दिसम्बर 1987 से दिसम्बर 1989 तक भूटान में शाही भूटानी सेना के अधिकारियों को प्रशिक्षण, 26 जनवरी 1984 को आपरेशन "रैकी" तथा 6488 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गौरी चेन शिखर पर सफल पर्वतारोहण के लिए सेना मैडल से अलंकृत 26 जनवरी 1986 को 1984 में सायचिन गलेशियर में एक पाकिस्तानी चौकी पर कब्जा करने पर पुनः सेना मैडल एवम् बार से अलंकृत–

विशेष : आप इस सम्मान को प्राप्त करने वाले केवल 14 अधिकारियों में से एक हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं तथा जोखिमपूर्ण खेलों में विशेष अभिरुचि रखते हैं: जिसमें प्रमुख हैं–

1. गौरी चेन अभियान (6488 मीटर) 1982
2. कामेट (7756 मीटर) 1983
3. 1985 में आपका चयन एवरेस्ट अभियान दल में प्रशिक्षण के लिए हुआ।
4. 3000 किलोमीटर की साइकल यात्रा तथा हवाई छतरी से छलांग का अभ्यास।

दोनों संगे भाई एवं पुरस्कार विजेता

ब्रिगेडियर राजेन्द्र पाल मित्तल भारतीय पुलिस पदक (सेवा निवृत)

जन्म 8 मार्च 1918 गांव बवानी खेड़ा जिला भिवानी। पिता स्व. श्री साहब लाल। शिक्षा राजकीय कालेज लाहौर से स्नातक, 19 अक्तूबर 1941 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त तथा द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्मा के युद्ध क्षेत्र में सक्रिय भाग लिया तथा 1947 में कश्मीर पर पाक आक्रमण के समय सक्रिय भाग। नागाहिल्स के सैनिक अभियानों में भी भाग लिया। तोपखाना रेजिमेंट के कमांडर, जनरल स्टाफ अधिकारी प्रथम श्रेणी, तोपखाना ब्रिगेड कमांडर तथा 1971 के भारत–पाक युद्ध में आप उप महानिरीक्षक के पद पर पंजाब के फिरोजपुर क्षेत्र में सीमा सुरक्षा बल के तोपखाना कमांडर थे तथा आपके वीरतापूर्ण नेतृत्व के लिए आपको भारतीय पुलिस पदक से अलंकृत किया गया।

ब्रिगेडियर मुकन्द लाल मित्तल सेना मैडल आपके छोटे भाई हैं। दोनों सगे भाइयों द्वारा अलंकरण प्राप्त करने का आपका प्रशंसनीय उदाहरण है।

ब्रिगेडियर मुकन्द लाल मित्तल सेना मैडल (सेवानिवृत)

जन्म 20 अप्रैल 1923 बवानी गांव खेड़ा जिला भिवानी, पिता स्व. लाला साहिब लाल, 1943 में एफ. सी. कालेज लाहौर से स्नातक, 1943 में सेना में प्रवेश तथा 16 दिसम्बर 1945 को सेना आयुध कोर में कमीशन।

5 सितम्बर 1953 को जबलपुर स्थित आयुध आपूर्ति केन्द्र के उप–शास्त्रागार में एक भयंकर विस्फोट हो गया। उस समय आप उस विस्फोटक केन्द्र के प्रभारी अधिकारी थे। आपने तीव्रता से दुर्घटना स्थल पर पहुंच कर जहां भयंकर आग लगी हुई थी, सबको अपने साथ लगाकर बलपूर्वक शस्त्रागार के लोहे के बन्द गेट को खोल दिया तथा जब तक आग पर सफलता पूर्वक काबू नहीं पा लिया गया आप आग से निरन्तर जूझते रहे। इस कार्य में आपने साहस और उच्च कोटि की कर्तव्य भावना का परिचय दिया तथा राष्ट्रपति द्वारा आपको सेना मैडल से अलंकृत किया गया।

आपकी नियुक्तियां इस प्रकार हैं :– सेना आयुध कोर में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद तक कमान की। रक्षा सेवा स्टाफ कालेज से स्नातक तथा जनरल स्टाफ अधिकारी द्वितीय श्रेणी। पश्चिमी उपकरण निदेशालय सेना मुख्यालय। आयुध निदेशालय में स्टाफ नियुक्तियां कर्नल व ब्रिगेडियर के पद पर तथा सेवा चयन केन्द्र की कमान। एक प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश गए तथा इंगलैंड में 1 वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 28 अप्रैल 1975 को आयुध निदेशालय में ब्रिगेडियर के पद से सेवानिवृत।

एयर कोमोडोर अशोक कुमार गोयल वायु सेना मैडल

जन्म 26 सितम्बर 1943, आपने गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि विश्वविद्यालय से 1963 में विज्ञान स्नातक की परीक्षा विशिष्टता से उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। भारतीय वायु सेना की उड़ान शाखा में दिसम्बर 1963 में कमीशन। आपको विभिन्न प्राकर के परिवहन विमानों के 7500 घंटों की उड़ान का अनुभव है जिसमें डकोटा, पैकेट, ए. एन. 12 तथा आई. एल.–76 (गजराज) शामिल हैं। वर्ष 1976 में आपको वायुसेना अध्यक्ष के प्रशंसा पत्र द्वारा सम्मानित किया गया तथा 1979 में पश्चिमी वायु कमान के एयर आफीसर कमांडिंग इन चीफ के प्रशंसा पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

आपको भारतीय वायुसेना के परिवहन बेड़े में विशालकाय आई. एल.–76 गजराज विमान को शामिल करने व उसके प्रथम कमान अधिकारी होने का गौरव प्राप्त है। आपने इस विमान को केवल 6 माह के अल्पकाल में ही भारतीय वायुसेना में पूर्णरूप से सक्रियात्मक बना दिया। आपने जम्मू कश्मीर के लेह व थोइस के दुर्गम क्षेत्रों में इस भारी माल वाहक विमान को सफलतापूर्वक प्रथम बार उतारा। जनवरी 1987 में (रेड–अलर्ट कास में) केवल 1700 मीटर की थोड़ी लम्बाई वाले विमान तल थोइस (विश्व के उच्चतम विमानतलों में से एक है) पर उतरने के लिए प्रशस्त किया। अभियान संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा भारी लड़ाकू वाहनों को चण्डीगढ़ से थोइस लाने में 3 दिनों में प्रतिदिन 4 बार उड़ानें भरीं। इस उपलक्ष्य में आपको 1988 में वायुसेना मैडल से अलंकृत किया गया।

ग्रुप कैप्टन गोयल ने सदैव ही उच्च कोटि के नेतृत्व, संगठनशक्ति एवं कर्तव्य भावना का विपरीत परिस्थितिं में भी चाहे स्वदेश में हो या विदेश में प्रदर्शन किया है। उनके गतिशील नेतृत्व व योग्य मार्ग दर्शन व निकट से मूल्यांकन निरीक्षण के कारण ही भारतीय वायु कर्मीदल को जो कि सोवियत सैनिक अकादमी में आई. एल. 76 भारी परिवहन विमान का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था, ने बहुत उत्तम श्रेणी प्राप्त की। स्वदेश लौटने पर प्रथम कमान अधिकारी के रूप में इसको पूर्णतया सक्रियात्मक करने सम्बन्धी जटिल कार्य को व अपने स्कवाड्रन को स्थानान्तरित करने जैसे कार्य को अत्यन्त सूझबूझ व योजनाबद्ध ढंग से पूर्ण किया। रख–रखाव, संक्रियात्मक एवं प्रशासन सम्बन्धी जटिलताओं से अविचलित ग्रुप कैप्टन गोयल ने एकाग्रचित हो कठिन परिश्रम व असाधारण क्षमता से अपने कर्मीदल को एक रिकार्ड समय में पूर्णतया प्रशिक्षित कर इस विशालकाय जैट का स्कवाड्रन खड़ा कर अत्यंत विश्वसनीय परिवहन व्यवस्था बना दिया।

आपने हर्ष पूर्वक सभी उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया तथा सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। आपकी इस असाधारण, व्यवसायिक योग्यता निस्वार्थ एवं उदाहरणीय समर्पण भावना तथा नेतृत्व के गुणों के कारण आपको वायु सेना मैडल से अलंकृत गिया गया। आप 1991 में एडर कोमोडोर पदोन्नत हुए तथा आगरा वायुसेना केन्द्र के वायु कमान अधिकारी के महत्वपूर्ण पद को सुशोभित कर रहे हैं।

श्री शान्तनु गोयल वायुसेना अध्यक्ष का प्रशंसा पत्र

आपके पुत्र शान्तनु गोयल भी आपकी ही तरह प्रतिभावान व रोमांचकारी कार्यों को करने में कुशल हैं। 11 नवम्बर 1991 तक आयोजित आकाश से कूदने की प्रतियोगिता में उन्होंने जोकि वायु सेना के विशेष रोमांचकारी संगठन द्वारा आयोजित की गई थी। देश के सबसे छोटी आयु के छाताधारी होने का गौरव प्राप्त किया तथा उसी अवसर पर तुरंत वायुसेना अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल निर्मल चन्द्र सूरी द्वारा परम विशिष्ट सेवा मैडल, अति विशिष्ट सेवा मैडल वायुसेना मैडल द्वारा वायुसेना अध्यक्ष के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया।

चित्र में श्री शान्तनु गोयल एयरचीफ मार्शल एन.सी. सूरी के साथ खड़े हैं।

ब्रिगेडियर कृष्ण कुमार मितल डिस्पैचेस में उल्लेख

1965 व 1971 के भारत पाक युद्ध

उप महानिदेशक सेना विमानन कोर

जन्म 21 मार्च 1940 जालंधर पंजाब, पिता श्री एच. एल. मितल, चण्डीगढ।

दिसम्बर 1960 में तोपखाना रेजिमेंट की स्वयं चालित रेजिमेंट में कमीशन, 1965 के भारत–पाक युद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा डिस्पैचेस में उल्लेख द्वारा अलंकृत, 1966 में सेना की एयर आबजर्वेशन पोस्ट में विमान व हैलाकाप्टर चालक बने।

कई रेजिमेंटल व स्टाफ नियुक्तियों के अतिरिक्त तोपखाना स्कूल के टैक्निकल विंग व कवचित कोर के स्कूल में प्रशिक्षक।

1971 के भारत–पाक युद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा पुनः डिस्पैचेस में उल्लेख द्वारा अलंकृत।

आज कल आप नवगठित सेना विमानन कोर में उप–महानिदेशक के पद पर नई दिल्ली में हैं।

एयर वाईस मार्शल विजयेन्द्र कुमार सिंघल विशिष्ट सेवा मैडल

जन्म 1 सितम्बर 1934 मेरठ उत्तर प्रदेश, पिता श्री श्यामसुन्दर लाल शिक्षा 1951 में विज्ञान स्नातक प्रथम श्रेणी में तथा 1956 में लखनऊ से एस. बी. बी. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 25 मई 1958 को भारतीय वायुसेना की चिकित्सा शाखा में कमीशन प्राप्त किया।

आप एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। आप वायुसेना के गिने–चुने चिकित्सा अधिकारी हैं जिन्हें चिकित्सक के साथ–2 पूर्णतया कुशल विमान चालक व छाताधारी होने का भी गौरव प्राप्त है। इसके अतिरिक्त आप एक प्रशिक्षित पर्वतारोही एवं वैमानिक औषध विज्ञान के भी विशेषज्ञ हैं। आप राष्ट्रीय रक्षा कालेज के प्रशिक्षार्थी भी हैं। आपने इंग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी व आस्ट्रेलिया में युद्ध–बचाव एवं स्कीइंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1974 में पश्चिमी वायु कमान के मुख्य वायु कमान अधिकारी का प्रशंसा पत्र प्राप्त किया तथा अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए जनवरी 1980 में विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत हुये। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैं:

विभिन्न उड़ान केन्द्रों के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, बर्फ से बचाव के स्कूल में छाताधारी उड़ान दस्ते की कमान। उड़ान चिकित्सा दस्ते की कमान और 75 से 750 बिस्तरों वाले हस्पतालों की कमान। उप–निदेशक चिकित्सा सेवा, वायुसेना मुख्यालय, सहायक महा–निदेशक (वैयक्तिक), महानिदेशक सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा रक्षा मंत्रालय, वायुसेना की दक्षिणी पश्चिमी वायु कमान के प्रिंसीपल चिकित्सा अधिकारी तथा वर्तमान में वायुसेना की प्रशिक्षण कमान बंगलौर में प्रिंसीपल चिकित्सा अधिकारी हैं।

मेजर जनरल अविनाश चन्द्र मंगला विशिष्ट सेवा मैडल

जन्म 25 सितम्बर 19036 जीन्द (हरियाणा), पिता स्व. श्री साधुराम मंगला, शिक्षा बी.ए. (आनर्स) एल. एल. बी. प्रथम श्रेणी से व चार विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। 1962 में दिल्ली बार काऊंसिल के सदस्य तथा एक वर्ष तक वकालत की। 30 जून 1963 को भारतीय सेना में न्याय महाधिवक्ता शाखा में कमीशन (वर्तमान में इस शाखा के सर्वोच्च पद न्यायमहाधिवक्ता के पद पर आसीन हैं)। महत्वपूर्ण नियुक्तियां व उपलब्धियां इस प्रकार हैं। मात्र 7 वर्ष की सेवा में ही लेफ्टिनेंट कर्नल पदोन्नत (साधारणतया इस पद पर 18 वर्ष के सेवाकाल के उपरान्त ही पदोन्ति होती है।) आप इस शाखा में सभी संभव नियुक्तियों पर आसीन रहे हैं। अप्रैल 1981 से 1984 तक उप–न्यायमहाधिवक्ता पूर्वी कमान अप्रैल 1984 से मार्च 1988 तक उप–न्यायमहाधिवक्ता केन्द्रीय कमान, अप्रैल 1988 से अगस्त 1991 तक उप–न्यायमहाधिवक्ता पश्चिमी कमान, 1 सितम्बर 1991 से आज तक मेजर जनरल व न्याय महाधिवक्ता के पद हैं। अलंकरण : 1984 में शानदार सेवाओं के लिए थल सेनाध्यक्ष के प्रशंसापत्र से पुरस्कृत। पुनः 1985 में शानदार सेवाओं के लिए थल सेना अध्यक्ष के प्रशंसा पत्र से पुरस्कृत। 1988 में राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवा मैडल से अलंकृत।

अपने सेना में कोर्ट मार्शल के केसों का न होने के बराबर होने का शानदार कीर्तिमान स्थापित किया है। जबसे आपने न्याय महाधिवक्ता का पद–भार ग्रहण किया है, कोर्ट मार्शल के केसों में भारी कमी आई है। आपने छोटे स्तर पर भी कानूनी सहायता प्रदान करने का तरीका सेना में प्रतिपादित किया है जिसके कारण अनुशासन सम्बन्धी मामलों का तीव्रता से न्यायपूर्ण निपटारा संभव हो पाया है। आपने सेना में अत्यंत लोकप्रिय पुस्तक 'हैण्डबुक आन मिलिटरी ला' का लेखन किया है। आपकी एक अन्य पुस्तक 'कामेन्टरी आन मिलिटरी ला इन इंडिया' प्रकाशनाधीन है। वर्ष 1986 में आपका इटली में आयोजित 'मानवीय कानून' से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चयन किया गया। वर्ष 1988 में दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी आपने अपने पत्र प्रस्तुत किए।

वर्तमान में आप अपनी शाखा के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर रहे हैं।

दोनों सगे भाई

एयर वाईस मार्शल कमल किशोर जैन (सेवानिवृत)

जन्म 1929 लखनऊ, पिता स्व. श्री पदम् सिंह जैन एडवोकेट, मेरठ, शिक्षा मेरठ से विज्ञान में स्नातकोतर तथा बरेली कालेज में विज्ञान के प्रवक्ता, 1950 में वायुसेना में प्रवेश तथा 5 दिसम्बर 1951 को भारतीय वायुसेना की तकनीकी शाखा में कमीशन। महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैः

इलाहाबाद, फरीदाबाद एवं आमला वायुसेना केन्द्रों के कमान अधिकारी तथा 1981 में ब्रिटेन के भारतीय उच्चायोग में उप महानिर्देशक, स्वदेश लौटने पर एयर वाईस मार्शल पदोन्नत तथा आपूर्ति मंत्रालय में एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति में नियुक्त। 1985 में 33 वर्ष की शानदार सेवा के उपरान्त वायुसेना से सेवानिवृत। वर्तमान में आप आदित्य बिरला उद्योग समूह में मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। आपके छोटे भाई एयर कोमोडोर कुमुद कुमार जैन वायुसेना मुख्यालय में प्रोवोस्ट मार्शल हैं।

एयर कोमोडोर कुमुद किशोर जैन

जन्म 18 अक्तूबर 1937 पिता स्व. श्री पदम् सिंह जैन एडवोकेट, मेरठ, शिक्षा –बी.ए. एल.एल.बी.। 30 दिसम्बर 1959 को भारतीय वायुसेना की प्रशासन शाखा में कमीशन। अमेरिका में सुरक्षा राडार कन्ट्रोलर के कोर्स पर जानेवाले पहले वायुसेना अधिकारी हैं। 1965 के भारत पाक युद्ध में पश्चिमी क्षेत्र में 1971 के भारत पाकयुद्ध में पूर्वी क्षेत्र में तैनात रहे। चार वायु सेना केन्द्रों में मुख्य प्रशासकीय अधिकारी रहे। वायुसेना केन्द्र आवड़ी के वायु कमान अधिकारी रहे। निदेशक वेतन पेंशन एवं नियम रहे। वर्तमान में आप प्रोवेस्ट मार्शल (वायुसेना पुलिस के मुखिया) के पद पर वायुसेना मुख्यालय नई दिल्ली में सेवारत हैं।

मेजर जनरल सुशील नाथ (बंसल) (सेवानिवृत)

जन्म 13 फरवरी, 1932 देहली, पिता श्री प्रकाश नाथ । आप पुरानी दिल्ली के प्रसिद्ध तोपखाना वाला परिवार से हैं। आप के परिवार के सदस्य मुगल सेना के तोपखाने में सैनिक अधिकारी थे।

आपके पुत्र मेजर अमिताभ नाथ भी सेना की 10वीं गार्डस बटालियन में सेवारत हैं। भारतीय सेना अकादमी से 1952 में सिग्नल कोर में कमीशन प्राप्त तथा रक्षा अध्ययन में स्नातकोत्तर तथा कई संस्थानों के सदस्य एवं कई प्रशिक्षक कमान एवं स्टाफ नियुक्तियां जिसमें उत्तरी कमान के मुख्य सिग्नल अधिकारी का पद भी शामिल है।

35 वर्षों की शानदार सेवा के उपरान्त सेवानिवृत एवं संघ लोकसेवा आयोग के दूरसंचार सलाहकार।

मेजर जनरल जितेन्द्र नाथ गोयल

(सेवानिवृत)

जन्म 13 मार्च 1935 सोनीपत (हरियाणा), पिता स्व. श्री पृथ्वी सिंह गोयल एडवोकेट जो कि बाद में जज बने। जनरल् गोयल एक स्वतन्त्रता सेनानी परिवार से संबंधित हैं। आपके पिता स्वतन्त्रता संग्राम में कई बार जेल गए।

3 जनवरी 1956 को भारतीय सेना की महार रेजिमेंट में कमीशन तथा 1958 में पैराशूट रेजिमेंट में स्थानान्तरण, जिसके आप कर्नल रहे हैं। यह पद रेजिमेंट के अत्यन्त लोकप्रिय अधिकारी को अपने सेवाकाल के समय दिया जाता है। अपने सेवाकाल के समय आपने 1965 व 1971 के भारत पाक युद्धों में सक्रिय भाग लिया।

1971 के भारत–पाक युद्ध में आपने राजस्थान के श्री गंगानगर क्षेत्र में एक पैराशूट बटालियन की सफल कमान की। शत्रु को न केवल उसके क्षेत्र में बहुत पीछे धकेला अपितु पाकिस्तान की चौकीयों पर आक्रमण कर उन्हें विजित किया तथा बहुत बड़े पाकिस्तानी भाग पर नियंत्रण कर लिया। 1989 से 1991 तक जम्मू कश्मीर क्षेत्र में सैनिक गुप्तचरी व प्रशिक्षण का कार्य जहां पर आपने भटके हुए कश्मीरी युवकों को राष्ट्र की मुख्यधारा में वापिस लाने का प्रयास किया। अपने 35 वर्ष के लम्बे सेवाकाल के समय आपने 1962 से 1965 तक हाई अल्टीटयूट वार फेयर स्कूल में पर्वतारोहण व स्कीइंग के प्रशिक्षण का कार्य भी किया है। 1975 से 1982 तक कालेज आफ काम्बेट महु में युद्ध क्षेत्र में उपकरणों के प्रयोग का भारतीय व विदेशी अधिकारियों को प्रशिक्षण, 1988 में श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के एक डिवीजन की वावुनिया क्षेत्र में लिट्टे के विरुद्ध अभियान में सफल व शानदार कमान की।

मार्च 1991 में सेवानिवृत।

मेजर जनरल राजेन्द्र कुमार जैन

(सेवानिवृत)

जन्म 19 मार्च, 1935 अमरौली (महाराष्ट्र), पिता स्व. बैरिस्टर जमना प्रसाद जैन, जिला एवं सत्र न्यायाधीश (सेवानिवृत)।

शिक्षा–पटवर्धन हाई स्कूल, नागपुर से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण एवं 1950 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश तथा 6 जून 1954 को इलैक्ट्रिकल मैकेनिकल इंजीनियर कोर में कमीशन। कालेज आफ मिलिटरी इंजीनियरिंग, पुणे से तकनीकी डिग्री प्राप्त। कई अन्य उच्च योग्यताएं प्राप्त की तथा अपनी कोर मे कई महत्वपूर्ण नियुक्तियां प्राप्त की। एक सितम्बर, 1990 को मेजर जनरल पदोन्नत एवं सैनिक वाहनों की गुणवत्ता निश्चित करने वाले निदेशालय में निदेशक के पद से 1992 में सेवानिवृत।

विशेषः आप शौकिया विमान चालक भी हैं। आपकी पुत्री ने भी यह प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

स्व. लेफ्टिनेंट नरेन्द्र कुमार जैन

(नौसेना)

जन्म 8 फरवरी, 1925, पिता स्व. बैरिस्टर जमना प्रसाद जैन 1943 में भारतीय सेना में कमीशन तथा बाद में शाही भारतीय नौसेना में स्थानान्तरण। 8 वर्ष की अल्पकालिकनौसैनिक सेवा के उपरान्त स्वैच्छिक सेवानिवृति तथा कुवैत एवं ब्रिटेन में रहे। 1956 में स्वदेश लौटने पर स्वतन्त्र पत्रकार बने एवं ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह के नेतृत्व वाले भारतीय अभियान दल में जोकि ऐवरेस्ट पर गया था, में शामिल हुए।

17 नवम्बर, 1963 को निधन।

स्व. मेजर ज्योति रानी जैन

जन्म सितम्बर, 1943, पिता स्व. बैरिस्टर जमना प्रसाद जैन, 1967 में नागपुर से चिकित्सा स्नातक तथा स्नातकोतर डिप्लोमा। आप बहुत ही साहसिक एवं रोमांचकारी महिला थीं। आपने शौकिया विमान चालक का प्रशिक्षण प्राप्त कर निजी विमान चालक का लाइसैंस प्राप्त किया।

संयुक्त राज्य अमेरिका की महिला विमान चालक संस्था की भारतीय सदस्या बनीं। बाद में आपने भारतीय वायुसेना की चिकित्सा सेवा में कमीशन प्राप्त किया तथा विमानन औषध का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा बाद में सेना चिकित्सा कोर में स्थानान्तरित। आप बहुत ही मानवीय आधार पर काम करने वाली चिकित्सक थीं। आपने आवश्यकता पड़ने पर स्वयं रक्त देकर अपने रोगियों की प्राण रक्षा की। 3 दिसम्बर, 1982 को कैंसर के कारण आपका असामयिक निधन हो गया।

विंग कमांडर सन्तोष कुमार जैन

जन्म मार्च, 1942, पिता स्व. बैरिस्टर जमना प्रसाद जैन, नागपुर 1963 में नागपुर इंजीनियरिंग कालेज से स्नातक तथा भारतीय वायुसेना की तकनीकी शाखा में कमीशन। आप भी शौकिया विमान चालक हैं तथा निजी विमान चालक का लाइसेंस प्राप्त है एवं मिग लड़ाकू विमान के इंजन विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में आप वायुसेना की रख–रखाव कमान नागपुर में सेवारत हैं।

इस परिवार के सदस्यों ने सेना, नौसेना व वायुसेना में सेवा की है।

एयर कोमोडोर एस. के. जैन

(सेवानिवृत)

जन्म 4 मार्च 1928, जीरा जिला फिरोजपुर (पंजाब) पिता स्व. श्री एन. सी. जैन (केन्द्रीय सेवा में अधिकारी), शिक्षा हरकोर्ट बटलर हाई स्कूल, शिमला व दिल्ली। आप वाहन यान्त्रिकी में प्रथम वर्ष प्रशिक्षण बीच में छोड़ कर 1946 मैं भारतीय वायु में भर्ती हुए। एक अप्रैल 1949 को कमीशन प्राप्त। आपने अपने पूरे सेवाकाल में बमवर्षक विमानों को उड़ाया है। प्रथम नियुक्ति लिबरेटर भारी बमवर्षक स्कवाड्रन में हुई। आपकी योग्यताएं व नियुक्तियां इस प्रकार हैं:–

जूनियर कमांडर कोर्स, उड़ान प्रशिक्षक का कोर्स, विमानन् चिकित्सा कोर्स, 1957 में ब्रिटेन में कैन्बरा भारी बमवर्षक, विमान का प्रशिक्षण तथा 1972 में राष्ट्रीय रक्षा कालेज में प्रशिक्षण, 1962 में इराकी वायु सेना में प्रशिक्षक, 5वें स्कवाड्रन में फलाईट कमांडर, 57वें अग्जिलरी वायु स्कवाड्रन (पंजाब) के कमान अधिकारी, वायु सेना अकादमी जोधपुर के मुख्य उड़ान प्रशिक्षक, एयर स्टाफ अधिकारी पश्चिमी वायुसेना कमान प्रभारी उड़ान अधिकारी वायुसेना केन्द्र गोरखपुर एवं पुणे। गोरखपुर वायुसेना केन्द्र के वायु कमान अधिकारी, वरिष्ठ एयर स्टाफ अधिकारी केन्द्रीय वायु कमान मुख्यालय, वायु सेना केन्द्र पुणे के कमान अधिकारी के रूप में सेवानिवृत।

एयर कोमोडोर अशोक कुमार (सेवानिवृत)

जन्म 24 जनवरी 1931 मेरठ, उत्तर प्रदेश, पिता स्व. श्री पीताम्बर दास जो भारतीय जनसंघ दिल्ली के वरिष्ठ नेता थे। भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में कमीशन तथा भारी बमवर्षक विमान कैन्बरा के अनुभवी विमान चालक रहे। आपकी महत्वपूर्ण नियुक्तियां इस प्रकार हैं।

मई 1967 से अक्तूबर 1969 तक विंग कमांडर के पद पर, एक जैट बमवर्षक स्कवाड्रन के कमान अधिकारी। नवम्बर 1969 से अक्तूबर 1973 तक ब्रिटेन में भारतीय उच्चायोग में उप–वायु सलाहकार। अक्तूबर 1973 से मार्च 1976 तक एक आपरेशनल विंग की कमांड, गुप कैप्टन के रूप में मार्च 1976 से दिसम्बर 1978 तक वायु सेना अकादमी के बेस कमांडर। एयर कोमोडोर पदोन्नत तथा वायुसेना केन्द्र जलाहली (बंगलौर) के वायु कमान अधिकारी, जनवरी 1979 से दिसम्बर 1979 तक। जनवरी 1980 से दिसम्बर 1980 तक राष्ट्रीय रक्षा कालेज नई दिल्ली में प्रशिक्षण। अक्तूबर 1981 से अक्तूबर 1984 तक राष्ट्रीय कैडेट कोर के उप महानिदेशक, नई दिल्ली के पद से सेवानिवृत।

मानद् एयर कोमोडोर विजयपत सिंघानिया

आप देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति हैं रेमंड बुलन सिल्क लिमिटेड के व्यवस्थापकीय संचालक अध्यक्ष हैं तथा प्रसिद्ध सिंघांनिया उद्योग समूह परिवार के वरिष्ठ सदस्य हैं। आपने विश्व विमानन के इतिहास में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "गिनिज बुक आप वर्ल्ड रिकार्डस" में अपना स्थान प्राप्त किया है।

आपने सबसे हल्के विमान (माइक्रो लाईट) इंडिया पोस्ट जो कि केवल 150 किलोग्राम वजन, 6.4 मीटर लम्बा तथा 132 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चलने वाला विमान है में लंदन से दिल्ली तक 85 घंटे की उड़ान व 23 दिनों के रिकार्ड समय में पूरा कर नया विश्व कीर्तिमान स्थापित कर अपने राष्ट्र को गौरवान्वित किया। इस प्रकार के साहसिक व रोमांचारी कार्य को इतने हल्के विमान द्वारा कम समय में इतनी दूरी को तय कर सकने वाले विश्व के तीसरे व भारत के प्रथम नागरिक होने का गौरव प्राप्त किया।

वायुसेना दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति जोकि सशस्त्र सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति हैं ने आपको आपके इस साहसिक कार्य के लिए भारतीय वायुसेना में मानद् एयर कोमोडोर के पद से सम्मानित किया।

ब्रिगेडियर जे. एस. जैन इंटैलिजैन्स कोर
(सेवानिवृत्त)

जन्म 5 नवम्बर 1932, पिता श्री रामजीलाल जैन गुड़गांवा (हरियाणा), शिक्षा सैंट जान कालेज व आगरा विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोतर तथा सेना में भर्ती से पहले आप कुछ समय वैश्य कालेज रोहतक में प्राध्यापक भी रहे। 06 जनवरी 1954 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन तथा 1969 में तोपखाना रेजिमेंट की 14 वर्षों के सेवा के उपरान्त सेना की गुप्तचर कोर में स्थानान्तरण तथा कई जटिल एवं संवेदनशील कर्तव्यों का निर्वाह। सेना मुख्यालय गृह मंत्रालय के स्तर पर कई नई सुरक्षा नीतियों का क्रियान्वयन, सुरक्षा एवं प्रतिगुप्तचरी आपका विशेष क्षेत्र रहा है। 15वीं कोर मुख्यालय में आपने कर्नल जनरल स्टाफ (गुप्तचर) के पद पर गुप्तचर व्यवस्था को उच्च स्तर की कुशलता से किया। काश्मीर में केन्द्रीय एवं राज्य की गुप्तचर एजेंसियों को निर्देश।

1985 में ब्रिगेडियर पदोन्नत। आपने सभी पदों पर अत्यन्त प्रभावी एवं प्रशंसनीय कार्य किया तथा 30 नवम्बर 1987 को सेवानिवृत।

ब्रिगेडियर इन्द्र अग्रवाल

पिता श्री शामलाल आप शहीद मेजर केवल कृष्ण अग्रवाल के छोटे भाई हैं। 1963 में भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में कमीशन जूनियर कमांड कोर्स महू से स्टाफ कालेज वेलिंगटन में प्रशिक्षक जूनियर कमांड महू एवम् प्रशिक्षक स्टाफ कालेज वेलिंगटन 1983–85 तक 22वीं राजपूत रेजिमेंट की कमान 1985–86 तक दीर्घ रक्षा प्रबन्ध कोर्स रक्षा प्रबन्ध कालेज सिकन्दराबाद से तथा वहीं पर 1986–89 तक प्रशिक्षक 23वीं डिविजन में कर्नल जनरल स्टाफ 165वीं पहाड़ी ब्रिगेड की कमान 1965 के भारत पाक युद्ध में आहत तथा अन्य आंतरिक सुरक्षा कार्यों में भाग। वर्तमान में आप दक्षिणी कमान में नियुक्त हैं।